SAPTHAGIRI (HINDI)
SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY
Volume:53, Issue: 12
May-2024, Price Rs.20/-, No. of pages-56.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

मई-2024

रु.20/-

तिरुपति
श्री गोविंदराजस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

दि.16-05-2024 से दि.24-05-2024 तक

दि. 09-04-2024 को तिरुमल श्री बालाजी के मंदिर में श्री क्रोधि नामक तेलुगु नूतन संवत्सर उगादि आस्थान, पंचांग स्रवण कार्यक्रम को अत्यंत वैभव से संपन्न किया।

1

2

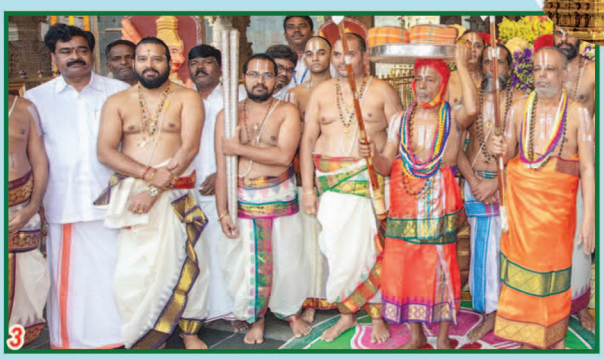
3

4

5

6

7

5. तिरुचानूर, श्री पद्मावती देवी मंदिर में (09-04-2024) उगादि संदर्भ में पुष्प पालकी सेवा को संपन्न किया।

6. श्रीनिवासमंगापुरम्, श्री कल्याण वेंकटेश्वरस्वामी मंदिर में (09-04-2024) उगादि आस्थान, पंचांग स्रवण कार्यक्रम को निर्वहण किया।

7. तिरुपति, श्री कोदंडरामस्वामी मंदिर में (09-04-2024) उगादि आस्थान, पंचांग स्रवण कार्यक्रम को आयोजित किया। इस कार्यक्रम में तिरुमल श्रीश्रीश्री पेद्द(बडा) जीयर स्वामीजी, श्रीश्रीश्री चिन्न(छोटे) जीयर स्वामीजी ने भाग लिया।

दि. 09-04-2024 को तिरुपति संयुक्त कार्यनिर्वहणाधिकारी (एच.&ई.) पद के कार्यभार को स्वीकारते हुए श्रीमती एम.गौतमी, आई.ए.एस.

मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदुःखदाः।
आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत।।

(- श्रीमद्भगवद्गीता - सांख्ययोग २-१४)

हे कुन्तीपुत्र! सर्दी-गर्मी और सुख-दुःख को देनेवाले इन्द्रिय और विषयों के संयोग तो उत्पत्ति, विनाशशील और अनित्य हैं; इसलिये हे भारत! उनको तू सहन कर।

एक्कडि मानुषजन्मंबेत्तिन फलमेमुन्नदि
निक्कमु निन्ने नम्मिति नीचित्तंबिकनु ।।एक्कडि।।

मरुवनु आहारंबुनु मरुवनु संसार सुखमु
मरुवनु इंद्रिय भोगमु माधव नी माय
मरचेद सुज्ञानंबुनु मरचेद तत्त्व रहस्यमु
मरचेद गुरुवु दैवमु माधव नीमाय ।।एक्कडि।।

विडुवनु बापमु पुण्यमु विडुवनु ना दुर्गुणमुलु
विडुवनु मिक्किलि यासलु विष्णुड नीमाय
विडिचेद षट कर्मंबुलु विडिचेद वैराग्यंबुनु
विडिचेद नाचारंबुनु विष्णुड नी माय ।।एक्कडि।।

तगिलेद बहुलंपटमुल तगिलेद बहुबंधम्मुल
तगुलनु मोक्षपु मार्गमु तलपुन एंतैना
अगपडि श्री वेंकटेश्वर अंतर्यामिवै
नगि नगि नीवेलिति नाका ई माया ।।एक्कडि।।

जन्मों में श्रेष्ठ मानव जन्म प्राप्त होने पर भी उसका दुरुपयोग करनेवालों को सचेत किया गया है। मानव का जन्म पाना तो अत्यंत दुर्लभ है ही। इस सत्य को जानते हुए भी मैं तुम्हारी सेवा की उपेक्षा कर रहा हूँ। आहार-विहार, इंद्रिय-सुखों को तो मैं ठुकरा नहीं पा रहा हूँ। सुज्ञान तत्त्व रहस्य तथा गुरु की महिमा को आसानी से भूल जा रहा हूँ। यह तो तुम्हारी ही माया है। पाप, पुण्य, दुर्गुण, सुखों की तरफ आकर्षण को तो छोड नहीं पा रहा हूँ, लेकिन षट्कर्म, वैराग्य तथा आचारों को तो झट छोड रहा हूँ। यह सब हे परमात्मा! तुम्हारी माया के सिवा और क्या है? हर क्षण अनेक बंधनों में बंधता जा रहा हूँ, लेकिन मोक्ष के मार्ग में अपने आपको बाँध नहीं पा रहा हूँ। हे अन्तर्यामी! मेरी विवशता पर तुम हँस रहे हो न? मैं तो कहता हूँ, यह भी तुम्हारी ही माया है।

संकीर्तना सौजन्य - ति.ति.दे. प्रकाशक, अन्नमाचार्य गीत-माधुरी, डॉ.पी.नागपद्मिनी

सप्तगिरि पाठकों के लिए सूचना

'सप्तगिरि' एक आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका है। सप्तगिरि के लिए आपका प्रेम अद्वितीय और असाधारण है। 'सप्तगिरि' ति.ति.दे. के और पाठकों के बीच एक पुल के जैसा काम कर रही हैं।

सप्तगिरि पत्रिका के दाम में परिवर्तन हुआ है।

स्वामी के आगमन की अनुभूति अपने ही घर में पाइए।

सप्तगिरि आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका के लिए चंदा भर कर...

श्रीहरि का अक्षर प्रसाद हर महीने स्वीकार कीजिए।

सप्तगिरि

आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

(हिन्दी, तमिल, कन्नड, तेलुगु, अंग्रेजी और संस्कृत भाषाओं में प्रकाशित हो रही है।)

चंदा का विवरण

एक प्रति - रु.20/-

वार्षिक चंदा - रु.240/-

जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) - रु.2,400/-

विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा - रु.1,030/-

दाम में परिवर्तन सितंबर - 2022 महीने से लागू हो गया है।
नये चंदादार पर ही ये परिवर्तन लागू होगा।

अन्य विवरण के लिए कृपया संपर्क करें -
प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, ति.ति.दे. प्रेस परिसर, के.टी.रोड,
तिरुपति - 517 507, तिरुपति जिला, आंध्र प्रदेश।
दूरभाषा - 0877-2264363, 2264543.

सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की
आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेंङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति।।

वर्ष-54 मई-2024 अंक-12

विषयसूची

नमामी देवी नर्मदे	श्रीमती प्रीति ज्योतीन्द्र अजवालीया	07
तिरुपति तातय्यगुंटा-गंगम्मा का वैभव	श्री सी.सुधाकर रेड्डी	10
श्री रामानुज नूट्रन्दादि	श्री श्रीराम मालपाणी	14
अक्षयतृतीया	श्री ज्योतीन्द्र के.अजवालीया	15
श्री वेंकटाचल की महिमा	आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	18
नरसिंहावतार और नव नरसिंह क्षेत्र अहोबिल	प्रो.आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	21
श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108	श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया	25
कूर्मावतार	डॉ.एच.एन.गौरीराव	31
भगवद्गीता का संदेश	श्री पी.वी.लक्ष्मीनारायण	34
माद्री	डॉ.के.एम.भवानी	37
मैं प्रथम राम! भार्गव परशुराम!!	डॉ.विजयप्रकाश त्रिपाठी	39
तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर (तिरुपति बालाजी)	प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव प्रो.गोपाल शर्मा	41
सुपारी का महत्व	डॉ.सुमा जोषि	44
मई महीने का राशिफल	डॉ.केशव मिश्र	47
नीतिकथा - चतुर चोर	श्री के.रामनाथन	48
चित्रकथा - भक्तों को तंग करें तो	डॉ.एम.रजनी	50
क्विज - 22		52

website: www.tirumala.org or www.tirupati.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है। सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri.helpdesk@tirumala.org

मुखचित्र - उभयदेवेरियों सहित श्री गोविंदराजस्वामी, तिरुपति।
चौथा कवर पृष्ठ - श्री कल्याण वेंकटेश्वरस्वामी, नारायणवनम्।

गौरव संपादक
श्री ए.वी.धर्मारेड्डी, आई.डी.ई.एस.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी(एफ.ए.सी), ति.ति.दे.

प्रधान संपादक
डॉ.के.राधारमण

संपादक
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा

मुद्रक
श्री पी.रामराजु
विशेष अधिकारी,
पुस्तक बिक्री केंद्र & मुद्रणालय,
ति.ति.दे., तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक चित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

एक प्रति .. रु.20-00
वार्षिक चंदा .. रु.240-00
जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) .. रु.2,400-00
विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा .. रु.1,030-00

अन्य विवरण के लिए
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 2264359, Editor - 2264360.

सूचना

मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।

- प्रधान संपादक

संपादकीय

'अन्नदान' - सर्वोत्कृष्ट दान...

बुजुर्गों ने कहा 'अन्नं परब्रह्मस्वरूपम' है। सभी दानों में सर्वश्रेष्ठ यह है कि जो लोग अन्नदान करते हैं उन्हें देवलोकपूजा प्राप्त होता है। जिसे पुरुषार्थ साधन के लिए शारीरिक की आवश्यकता होती है। यह शरीर केवल अन्न से ही मात्र जीवित होते है। जिन्होंने अन्नदान दिया है वे जीवन देने वाले बन जायेंगे। जीवन देना सब कुछ देने के समान है, इसलिए उन्हें सब कुछ दान करने का फल मिलता है। बड़े-बुजुर्ग कहते हैं कि जो व्यक्ति अन्न खाकर उस शक्ति से कोई पवित्र कार्य करता है, उसका पुण्य में आधा भाग अन्नदाता को, और एक आधा भाग जो कार्य करनेवाले को दे दिया जाता है।

'मानव सेवा ही माधवसेवा' ने कहा। भूखे को अन्न देने से महान यज्ञ करने का फल मिलता है। लोग भोजन से संतुष्ट हो सकते हैं, चाहे कितना भी सोना और कपड़े दिए जाएं, आशा पर्याप्त नहीं है और वे अभी भी अधिक चाहते हैं। केवल अन्नदान में मात्र ही 'मत' शब्द सुन सकते हैं कि भोजन देना ही काफी है। ऐसा कहा जाता है कि अन्नदान से त्रिलोकों में यश, तेज व बल मिलती है। वेदोक्ति के अनुसार स्वर्ग में प्रथम प्रवेश अन्नदान करने वाले को मिलता है। इस कहावत को तिरुमल तिरुपति देवस्थान ने आचरण करके दिखाति है।

मंदिरों में 'प्रसाद के उपयोग' में इह व पर की महानता है। पूजादि कार्यक्रम आयोजित करने आनेवाले को और मंदिर दर्शन के लिए आनेवाले भक्तों को प्रसाद वितरण करना सनातन संप्रदाय है। तिरुमल के कुछ उत्सवों में भी अन्नदान से ही सम्बंधित हैं। 'तिरुप्पावडा सेवा' इस के अंतर्गत आते है। सलुवनरसिंहरायलु नामक राजा ने तिरुमल क्षेत्र में भक्तों की भूख को संतुष्ट करने के लिए अन्नदान संबंधित धर्मशालाओं का निर्माण किया। श्री कंदाडै रामानुज अय्यंगार के पर्यवेक्षण में 'रामानुज कूटमुलु(समिति)' आविर्भाव हुई है। इस प्रकार तिरुमल तिरुपति देवस्थान ने कुछ वर्षगांठ स्वामि भक्तों की सेवा में माने अन्नदान करके, मानव सेवा में निमग्न हुई है।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान ने इस पवित्र पुण्य कार्यक्रम दि. 06-04-1985 में प्रारंभोत्सव किया। दो हजार भक्तों से प्रारंभ होकर आजकल यह ट्रस्ट बहुत विस्तार हुआ है। पूर्व में श्री बालाजी मंदिर में दर्शन पूर्ति करने वाले भक्तों को ही मात्र अन्नदान दिया जाता है। लेकिन तो 2006वा वर्ष में उस समय के ति.ति.देवस्थान के न्यास-मंडली के अध्यक्ष जी ने भगवानजी के दर्शन के बिना, तिरुमल आनेवाले सभी भक्तों को श्रीवारि प्रसाद भोजन की सुविधा प्रदान किया है।

उसके बाद, तिरुमल तिरुपति देवस्थान ने नित्य अन्नदान नूतन भवन केंद्र को शुरू किया। तिरुमल आनेवाले सभी भक्तों को भोजन कराने वाले भक्तयोगिनि मातृश्री तरिगोंडा वेंगमाम्बा की नाम से इस अन्नदान भवन को रख कर सदाचार संस्कृति को पालन-पोषण किया हैं। इसी संस्कृति के अंतर्गत तिरुचानूर, श्री पद्मावती देवी आलय में भी नित्य अन्नदान को प्रारंभोत्सव किया है। अब दि. 29-02-2024 को तिरुपति, श्री गोविंदराज स्वामी मंदिर में भी हर दिन नित्य अन्नदान को प्रारंभोत्सव किया। सभी भक्तगण इस सुविधा को उपयोग करने की इच्छा।

❋❋❋

नमामी देवी नर्मदे

- श्रीमती प्रीति ज्योतीन्द्र अजवालीया

नर्मदा नदी को रेवा के नाम से भी जाना जाता है। यह मध्य भारत की एक नदी और भारतीय उपमहाद्वीप की पांचवीं सबसे लंबी नदी है। यह गोदावरी नदी और कृष्णा नदी के बाद भारत के अंदर बहने वाली तीसरी सबसे लंबी नदी है। मध्यप्रदेश राज्य में इसके विशाल योगदान के कारण इसे ''मध्यप्रदेश की जीवन रेखा'' भी कहा जाता है।

पर्वतराज मैखल की पुत्री नर्मदा का उद्गम स्थल

विंध्य की पहाड़ियों में बसा अमरकंटक एक वन प्रदेश है। अमरकंटक को ही नर्मदा का उद्गम स्थल माना गया है।

पृथ्वी पर नर्मदा नदी का अवतरण कैसे हुआ?

मध्यप्रदेश के अमरकंटक में प्रसिद्ध नर्मदा नदी का उद्गम स्थल माना गया है। अमरकंटक कई ऋषि और मुनियों की तपोभूमि रही है। जगद्गुरु शंकराचार्य ने यही पर नर्मदा के सम्मान में 'नर्मदाष्टक' लिखा था। नर्मदा के जल का राजा है मगरमच्छ जिसके बारे में कहा जाता है कि धरती पर उसका अस्तित्व 25 करोड़ साल पुराना है। माँ नर्मदा मगरमच्छ पर सवार होकर ही यात्रा करती हैं। धरती पर नर्मदा अवतरण की कथा स्कंद पुराण में मिलती है।

नर्मदा नदी की कथा

स्कंद पुराण में वर्णित है कि राजा-हिरण्यतेजा ने चौदह हजार दिव्य वर्षों की घोर तपस्या से शिव भगवान को प्रसन्न कर नर्मदा जी को पृथ्वी तल पर आने के लिए वर मांगा। शिव जी के आदेश से नर्मदा जी मगरमच्छ के आसन पर विराज कर उदयाचल पर्वत पर उतरीं और पश्चिम दिशा की ओर बहकर गईं।

उसी समय महादेव जी ने तीन पर्वतों की सृष्टि की- मेठ, हिमावन, कैलाश। इन पर्वतों की लंबाई 32 हजार योजन है और दक्षिण से उत्तर की ओर 5 सौ योजन है।

स्कंद पुराण के रेवाखंड में वर्णन मिलता है कि नर्मदा के तट पर भगवान नारायण के सभी अवतारों ने आकर माँ की स्तुति की। पुराणों में ऐसा वर्णित है कि संसार में एकमात्र माँ नर्मदा नदी ही है जिसकी परिक्रमा सिद्ध, नाग, यक्ष, गंधर्व, किन्नर, मानव आदि करते हैं। माँ नर्मदा की महिमा का बखान शब्दों में नहीं किया जा सकता।

देव सरिता माँ नर्मदा अक्षय पुण्य देने वाली है। श्रद्धा शक्ति और सच्चे मन से माँ नर्मदा का जन अर्चन करने से सारी मनोकामना पूरी होती है। सरस्वती नदी में स्नान करने से जो फल तीन दिन में मिलता है, गंगा जी में स्नान से वह एक दिन में ही मिलता है। वही फल माँ नर्मदा के दर्शन मात्र से ही मिल जाता है।

आदिगुरु शंकराचार्यजी ने नर्मदाष्टक स्तोत्र में नर्मादा नदी माता को सर्वतीर्थ नायकी से संबोधित किया है। अर्थात माता को सभी तीर्थों का अग्रज कहा गया है। नर्मदा के तटों पर ही संसार में सनातन धर्म की ध्वज पताका लहराने वाले परमहंसी, योगियों

ने तप कर संसार में अद्वितीय कार्य किए। अनेक चमत्कार भी परमहंसियों ने किए जिनमें दादा धूनीवाले, दादा ठनठनपालजी महाराज, रामकृष्ण परमहंसजी के गुरु तोतापुरीजी महाराज, गोविंदपादाचार्य के शिष्य, आदिगुरु शंकराचार्यजी सहित अन्य विभूतियाँ शामिल हैं।

आज अमरकंटक से लेकर खंभात की खाड़ी तक के रेवा-प्रवाह निकलने वाले शिवलिंग को नर्मदेश्वर कहा गया है। यह घर में भी स्थापित किए जाने वाला पवित्र और चमत्कारी शिवलिंग है, जिसकी पूजा शास्त्रों में अत्यन्त फलदायी कही गई है। यह साक्षात शिवस्वरूप, सिद्ध व स्वयंभू (जो भक्तों के कल्याण के लिए स्वयं प्रकट हुए हैं) शिवलिंग है।

हिन्दू धर्म में महत्व

नर्मदा, समूचे विश्व में दिव्य व रहस्यमयी नदी है, इसकी महिमा का वर्णन चारों वेदों की व्याख्या में श्री महाविष्णु के अवतार वेदव्यास जी ने स्कन्द पुराण के रेवाखंड में किया है। इस नदी का प्राकट्य ही, विष्णु द्वारा अवतारों में किए राक्षस-वध के प्रायश्चित के लिए ही प्रभु शिव द्वारा अमरकण्टक (जिला शहडोल, मध्यप्रदेश जबलपुर-विलासपुर रेल लाईन-उडिशा मध्यप्रदेश ककी सीमा पर) के मैकल पर्वत पर कृपा सागर भगवान शंकर द्वारा 12 वर्ष की दिव्य कन्या के रूप में किया गया। महारूपवती होने के कारण विष्णु आदि देवताओं ने इस कन्या का नामकरण नर्मदा किया। इस दिव्य कन्या नर्मदा ने उत्तर वाहिनी गंगा के तट पर काशी के पंचक्रोशी क्षेत्र में 10,000 दिव्य वर्षों तक तपस्या करके प्रभु शिव से ऐसे वरदान प्राप्त किये जो कि अन्य किसी नदी और तीर्थ के पास नहीं है।

प्रलय में भी मेरा नाश न हो। मैं विश्व में एकमात्र पाप-नाशिनी प्रसिद्ध होऊँ, यह अवधि अब समाप्त हो चुकी है। मेरा हर पाषाण (नर्मदेश्वर) शिवलिंग के रूप में बिना प्राण-प्रतिष्ठा के पूजित हो। विश्व में हर शिव-मंदिर

में इसी दिव्य नदी के 'नर्मदेश्वर शिवलिंग' विराजमान है। कई लोग जो इस रहस्य को नहीं जानते वे दूसरे पाषाण से निर्मित शिवलिंग स्थापित करते हैं ऐसे शिवलिंग भी स्थापित किये जा सकते हैं परन्तु उनकी प्राण-प्रतिष्ठा अनिवार्य है। जबकि श्री नर्मदेश्वर शिवलिंग बिना प्राण-प्रतिष्ठा के पूजित है। मेरे (नर्मदा) के तट पर शिव-पार्वती सहित सभी देवता निवास करें।

सभी देवता, ऋषि-मुनि, गणेश, कार्तिकेय, राम, लक्ष्मण, हनुमान आदि ने नर्मदा के तट पर ही तपस्या करके सिद्धियाँ प्राप्त की। दिव्य नदी नर्मदा के दक्षिण तट पर सूर्य द्वारा तपस्या करके 'आदित्येश्वर तीर्थ' स्थापित है। इस तीर्थ पर (अकाल पड़ने पर) ऋषियों द्वारा तपस्या की। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर दिव्य नदी नर्मदा 12 वर्ष की कन्या के रूप में प्रकट हो गई तब ऋषियों ने नर्मदा की स्तुति की। तब नर्मदा ऋषियों से बोली कि मेरे (नर्मदा के) तट पर देहधारी सद्गुरु से दीक्षा लेकर तपस्या करने पर ही प्रभु शिव की पूर्ण कृपा प्राप्त होती है। इस आदित्येश्वर तीर्थ पर हमारा आश्रम अपने भक्तों के अनुष्ठान करता है।

ऐसी पवित्र मा नर्मदा को कोटी-कोटी वंदन!

❁❁❁

तिरुपति, श्री गोविंदराजस्वामीजी का

ब्रह्मोत्सव

(दि. 15-05-2024, बुधवार से दि. 24-05-2024, शुक्रवार तक)

दिनांक	वार	दिन	रात
15-05-2024	बुध	---	सेनाधिपति उत्सव, अंकुरार्पण
16-05-2024	गुरु	तिरुच्चि उत्सव, ध्वजारोहण	महाशेषवाहन
17-05-2024	शुक्र	लघुशेषवाहन	हंसवाहन
18-05-2024	शनि	सिंहवाहन	मोतीवितानवाहन
19-05-2024	रवि	कल्पवृक्षवाहन	सर्वभूपालवाहन
20-05-2024	सोम	पालकी में मोहिनी अवतारोत्सव	गरुडवाहन
21-05-2024	मंगल	हनुमन्तवाहन	गजवाहन
22-05-2024	बुध	सूर्यप्रभावाहन	चंद्रप्रभावाहन
23-05-2024	गुरु	रथ-यात्रा	अश्ववाहन
24-05-2024	शुक्र	पालकी उत्सव, चक्रस्नान	तिरुच्चि उत्सव, ध्वजावरोहण

सप्तगिरिस्वामी की बहन का मेला

सात रंगों के इन्द्र-धनुष का मेला

सात दिनों का मेला

तिरुपति तातय्यगुंटा 'गंगम्मा का मेला'

आंध्रप्रदेश, तिरुपति जिला में विराजित 'तातय्यगुंटा गंगम्मा मेला' पौराणिक और ऐतिहासिक रूप से आयोजित होनेवाले त्योहारों में से एक है। इस वर्ष गंगम्मा मेला सात दिवसीय मेला है। हर वर्ष मई महीने में संपन्न करते है। इस मेला पौराणिकता ही दृष्टि से प्रसिद्ध होने का मुख्य कारण यह है कि गंगम्मा तिरुमल श्री वेंकटेश्वर स्वामी की छोटी बहन है। तिरुमलेश मंदिर से तिरुमल तिरुपति देवस्थान के अधिकारियों ने मेले के दिनों में, गंगम्मा के लिए रेशम के वस्त्र, हल्दी, कुंकुम, टोकरियाँ, सूप आदि मंगल द्रव्य उपहार के रूप में लाते हैं।

संस्कृत में 'जात' शब्द का अर्थ 'जन्म' होता है। ऐतिहासिक रूप से, यह जानने के लिए कोई सबूत नहीं है कि तातय्यगुंटा गंगम्मा मेला कब शुरू हुआ। इसका कारण यह है कि गंगम्मा मेला का जन्म दिन का इस उत्सव को आयोजित करनेवाली पहली महिला थीं। यह देश के ऐतिहासिक शोधकर्ताओं एवं सांस्कृतिक विशेषज्ञों द्वारा पुष्ट सर्वोच्च सत्य है।

तिरुपति तातय्यगुंटा - गंगम्मा का वैभव

तेलुगु मूल
डॉ:ए:विभीषणशर्मा

अनुवादक
श्री सी:सुधाकर रेड्डी

किसी भी मूर्ति पूजा की एक कहानी अवश्य होनी चाहिए। इसके अलावा तातय्यगुंटा गंगम्मा आविर्भाव की एक पौराणिक कहानी से जुडी हुई है।

किसी समय तिरुपति एक छोटा-सा गाँव था। इस गाँव पर एक बलशाली का शासन था। बलशाली को यह सोचने की मानसिकता है कि- आप जो कहते है वह न्याय है और जो आप आचरण करते हैं वह धार्मिक है। पुराने जमाने में गाँव का मुखिया ही सर्वशक्तिमान व्यक्ति होता था और वह महिलाओं को पीडित होते थे। माताओं की माता के प्रति दुष्ट आदमी से बचने के लिए बागान करते थे। इन्हीं प्रार्थनाओं के फलस्वरूप तिरुपति के निकट अविलाला गाँव में 'आदिपराशक्ति' के रूप में प्रकट हुई।

'आदिपराशक्ति' गाँव के मुखिया के पाप को समाप्त करना चाहती थीं। साथ में रहनेवाली स्त्रियों पर होनेवाले अन्याय का दण्ड देना चाहती थी। वह एक की पत्नी बन गई। मुखिया के घर चला गया। उसकी शक्ति के स्वरूप का एहसास हुआ। गाँव का शासक डरा हुआ था। वह खुद को बचाने के लिए तुरंत घर से निकल गया। शक्ति भागे हुए बलशाली को ढूँढ-ढूँढ कर मारना चाहती थी।

बलशाली शक्ति को बिना दिखाई पड़े दौड़ा। शक्ति दिन-ब-दिन एक-एक भेष में रहकर वेष बदलकर खोजती रही। वह उसकी तलाश जारी रखी। गलियों में गालियों के प्रति कोई भी विरोध करेगा, इसकी भावना से वह अपने आपको गालियाँ देते हुए तलाश जारी रखी। इसी तरह सात दिन बीत गए। अंत में उसने तातय्यगुंटा के पास बलशाली को पकड लिया। उसकी हत्या कर दी। वैसा हत्या का समय तमिल का महीना चित्तिरै महीना था।

जैसे-जैसे गाँव का बोझ टूटता जा रहा है, गाँववाले कहते है। माँ तुम यही रहो और सदैव हमारी रक्षा करे। इस तरह प्रार्थना करने पर वह पराशक्ति तातय्यगुंटा के पास गंगम्मा के रूप में अवतरित हुई। इसलिए तातय्यगुंटा को गंगम्मा के नाम से जाना जाने लगा। इस वीरतापूर्ण घटना को प्रमाण के रूप में तिरुपति में सात दिनों तक मेले लगते हैं जिनमें विभिन्न रूपों में ग्रामीण संस्कृति की झलक मिलती हैं।

तिरुपति में मनानेवाला गंगम्मा मेला देश में कही और नहीं लगता। रोज-रोज वेषधारणा, गालियाँ देते हुए गलियों में घूमना किसी को भी अजीब लगता है। लेकिन इनमें निहितार्थ है।

पहले दिन 'बैरागी पोशाक' है। मनुष्य धर्म, अर्थ और काम को पुरुषत्व मानता है। यह अनुचित है। मोक्ष अंतिम है। मोक्ष की प्राप्ति के लिए मनुष्य बैरागी बनना चाहिए। इसलिए ''बैरागी'' वेषधारण करते हैं। सभी चीजों में कमल पर पानी की एक बूँद की तरह है। संदेश यह है कि विरागी ऐसा होना चाहिए।

दूसरे दिन 'चट्टान वेषधारण' है। चट्टान निश्चल है, कितनी भी मुसीबतें और दोष आएँ, सब शरीर के लिए है, मन के लिए नहीं है। ऐसा सोचना ही सहिष्णुता है। इस भेष का यही उद्धेश्य है।

तीसरे दिन 'तोटि' भेष है। इस वेष को कैकला जाति के लोग महिलाओं के रूप में यह पोशाक पहनकर अपनी भक्ति प्रदर्शित करती है। धोबी पुरुष वेषधारण करता है। माने आदमी की तरह कपडे पहनता है। संदेश यह है कि भले ही कोई 'तोटि' अपना काम पेशे के तौर पर करे, लेकिन उसकी सेवा मानवसेवा ही है।

चौथे दिन राजा का वेषधारण है। कैकाल और धोबी वंश भी यह पोशाक वंशानुगत पहनते हैं। कैकाल

जाति के लोग राजा का वेषधारण करते है तो, एक धोबी के लिए मंत्री की तरह पोशाक पहनने की प्रथा है।

पाँचवे दिन के मेले में चूने के बर्तन ले जाने की प्रथा है। कैकाल लोग चूने के बर्तन को अपने सिर पर रखकर इसका सेवन करते हैं। घड़ा शरीर का प्रतीक है। गमले में लपेटे हुए चमेली के फूल सद्भावना का प्रतीक है। पीली साडी कल्याण प्रदत्व के लिए और वाद्यमंत्र शब्द मंगल की बातों के लिए प्रतीक है।

छठे दिन 'मातंगीवेषधारणा' है। मातंगी हजार नेत्रोंवाली देवी हैं। यह अवधारणा है कि हजार नेत्रोंवाले विष्णु की तरह गंगम्मा भी विश्वरूपिणी है।

सातवे दिन 'सप्पराल' वेषधारणा है। गोपुरम की तरह सप्पराल को ढोना, यह द्वैतवाद का लक्षण है। तात्पर्य यह है कि वासनामयी आत्माओं को उसमें प्रवेश

करने से बचाया जाए। इनके अलावा परांतला पोशाक मंगलवार को है। यह पोषाक कैकालों के द्वारा पहनी जाती है।

छोटी गंगम्मा, उसके ऊपर बड़ी गंगम्मा के रूपों के गालों को काटने से मेला समाप्त होता है। इस तरह आकार निर्माण में रेड्डी, बढ़ई, धोबी, लोहार, तोटि वंश के लोग सहायता करते हैं। गंगम्मा की गुडिया बनाने में दलित, कुम्हार, लोहार, नाई, ग्वाल जैसे मिराशिदार अपने-अपने कर्तव्य निभाते हैं। कैकाल जाति द्वारा देवी के विश्वरूप को विभाजित करने के बाद भक्त उस मिट्टी को बड़ी श्रद्धा से ग्रहण करते हैं। बाद में वे इसे अपने-अपने घरों में ले जाते हैं और बीमारी की रोकथाम, विकास और कई विकट समस्याओं के समाधान के लिए सुरक्षा के साथ रखते हैं।

इस गंगम्मा मेला के दौरान अपार लोग माताजी के दर्शन के लिए आते हैं। विभिन्न प्रकार के चढाव चढ़ाने की प्रथा है। आदिशंकराचार्य धर्म के अनुसार, सभी ग्राम देवता काली के रूप है।

तिरुपति तातय्यगुंटा गंगम्मा मेला के दिन श्री बालाजी दर्शन के लिए जो भक्त आते थे, वे इधर आकर गंगम्मा का दर्शन कर लेते थे। इस मेले में वेषधारण करनेवालों की गालियों को देखकर लोग आश्चर्यचकित होते थे। इस तरह की गालियाँ कहीं देखा या सुना नहीं। इसके लिए कारण है।

महाभारत में दुर्योधन अपने पूरे परिवार के मरने के बाद, अंततः अपनी जान के डर से एक झील में छिप गया। यदि आप नहीं जानते हैं कि उसे कैसे ऊपर उठाया जाए, मालूम न होने पर उसके पौरुष का मजाक उडाया। मानधनु एक ऐसा राजा है, जो अपमान का सहन नहीं कर सकता। वह दुर्योधन मन्यगुण के

साथ झीले से बाहर आगया। उसे भीम के हाथ दुर्गति प्राप्त हुई। यह एक प्रतिद्वन्द्वी पर निर्देशित फटकार है। यह उसकी आँखों से छुपी हुई गाँव के मुखिया को उत्तेजित करके बाहर निकालने की एक तरकीब है। यह उन लोगों के लिए सही जवाब है जो मेले में वेषधारण किए हुए लोग गालियाँ क्यों देते है?

वैसा भी गंगम्मा तिरुपति ग्राम प्रधान देवी हैं। यह मंदिर धीरे-धीरे विकसित हो रहा है।

इसके अंतर्गत तातय्यगुंटा देवस्थान ने भक्तों के अनुरोध पर 1-5-2023 से 5-5-2023 तक यंत्र, विग्रह, शिखर कलश, निश्चित प्रतिष्ठा एवं महाकुंभाभिषेक महोत्सव का आयोजन किया। इस के लिए तिरुमलेश का सहयोग अपार है। परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीश्रीश्री कंचि कामकोटि पीठाधिपति, जगद्गुरु, श्रीश्रीश्री शंकर विजयेन्द्र सरस्वती स्वामीजी के अमृत हस्तों से महाकुंभाभिषेक परिपूर्ण किया गया था। दत्तपीठ के प्रमुख अवधूत श्री गणपति सच्चिदानंद स्वामीजी ने कहा कि यह गंगम्मा उस समय के भगवान कृष्ण की योगमाया थीं। विशाखा शारदापीठ के प्रमुख गुरुजी श्रीश्रीश्री स्वरूपानंद्रेन्द्र सरस्वती स्वामीजी ने फैसला किया चूँकि गंगम्मा अब शांत मूर्ति है। इसलिए यहाँ कोई पशु बलि नहीं दी जानी चाहिए। अतीत में भक्त गंगम्मा के उत्सव और शिलामय मंदिर देखेंगे।

गाँव की रक्षा करना, चेचक जैसी बीमारियों से बचाना, बुरी आत्माओं से बचाना, कीडों से होनेवाली अजीब-अजीब सी बीमारियों से बचाना, बारिश के बाद खेतों को डेयरी फसलों से हरा-भरा रखना, फसलों को कीटों से मुक्त करवाना है। यह बन गया है कि कई प्रकार के शुभ परिणामों के लिए इस गंगम्मा पर मेला आयोजित करने की प्रथा है।

'कल्पवल्ली उन लोगों के लिए है - अपने सोने का वरदान है जो इसे मापते हैं।'

'खुश देनेवाली अमृतवल्ली उन भक्तों के लिए है - जो मेले में वेषधारण करते हैं।'

'आश्रयवल्ली उन अनंताल्वार के लिए है - जिन्हें श्रीनिवास 'दादा' कहते हैं।'

'करुणा' रसवल्ली जो दादाजी अनंताल्वार के तालाब में चमकते हैं।'

आइए हम इस गंगम्मा माता की सेवा करें। आइए हम खुशी और आनंद के साथ जिए...।

❁❁❁

नीति पद्यम्

आन्ध्र देश के कबीर श्री वेमना

(संत वेमना की कुछ चयनित पद्य)

विद्वत्पद्धति

कस्तुरि यटु जूड गांति नल्लगनुंडु
परिढविल्लु दांनि परिमव्वंबु
गुरुवुलैन वारि गुणमु लीलागुरा
विश्वदाभिरामा विनुरवेमा ।।27।।

सच्चे गुरु आडंबर-सहित जीवन नहीं बिताते। साधारण से साधारण वेष धारण किये रहते हैं। फिर भी उनकी महानुभावता आप ही चारों तरफ फैल जाती है। कस्तूरी(मृगमद) देखने में काली होती है, एकदम अनाकर्षक। फिर भी उसका सौरभ सर्वत्रा व्याप्त रहता है।

गतांक से

श्री रामानुज नूट्रन्दादि

मूल - श्रीरंगामृत कवि विरचित

प्रेषक - श्री श्रीराम मालपाणी

कण्डुकोण्डे नेम्मिरामानुजन् तन्नै, काण्डलुमे
तोण्डुकोण्डे नवन्तोण्डर् पोत्ताळिल्, एन्तोळै वेन्नोय्
विण्डुकोण्डे नवन्शीर्वेळ्ळ वारियै वायमडु, त्तिन्नु
उण्डुकोण्डेन्, इन्नमुत्तन वोदि लुलप्पिल्लैये ॥८४॥

अस्मत्स्वामिनं भगवद्रामानुजमद्याहं समसेविषि; संसेवनसमसमय एव तद्भक्तजनपादाब्ज भक्तिनिघ्नोऽभूवम्; ततश्चानादिदुरितसंचयविनिर्मुक्तस्समजनिषि; आचार्यसार्वभौमस्य तस्य कल्याणगुणामृतसागरास्वादनमप्यकार्षम्; एवं नाम मदीयक्षेमपरम्परा वाचामभूमिः।

मैंने आज श्री रामानुज स्वामीजी के दर्शन किये; (अर्थात् उनके स्वरूपस्वभावादियों को ठीक जान लिया;) दर्शन के समय ही उनके भक्तों के मनोहर श्रीपादों की भक्ति पायी; और (उससे) अपने समस्त पाप खो लिए; उन आचार्य-सार्वभौम के कल्याणगुणामृतसागर का आस्वादन भी किया। इस प्रकार मेरे उपलब्ध-कल्याण परंपरा सत्य ही वर्णनातीत है।

क्रमशः

अक्षयतृतीया

- श्री ज्योतीन्द्र के.अजवालीया

अक्षयतृतीया वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को मनाई जाती है। माना जाता है कि इस दिन कोई भी शुभ कार्य करने के लिए पंचांग देखने की जरूरत नहीं है। अक्षयतृतीया पर किए गए कार्यों का कई गुना फल प्राप्त होता है।

पुराणों में बताया गया है कि यह बहुत ही पुण्यदायी तिथि है इस दिन किए गए दान पुण्य के बारे में मान्यता है कि जो कुछ भी पुण्यकार्य इस दिन किए जाते हैं उनका फल अक्षय होता है यानी कई जन्मों तक इसका लाभ मिलता है।

अक्षयतृतीया का अर्थ

अक्षयतृतीया का अर्थ होता है ''जो कभी खत्म ना हो'' और इसीलिए ऐसा कहा जाता है कि अक्षयतृतीया वह तिथि है जिसमें सौभाग्य और शुभ फल का कभी क्षय नहीं होता। इस दिन होने वाले कार्य मनुष्य के जीवन को कभी न खत्म होने वाले शुभ फल प्रदान करते हैं। इसलिए यह कहा जाता है, कि इस दिन मनुष्य जीतने भी पुण्य कर्म तथा दान करता है उसे, उसका शुभ फल अधिक मात्रा में मिलता है और शुभ फल का प्रभाव कभी खत्म नहीं होता है।

शुक्ल पक्ष अर्थात अमावास्या के बाद के पंद्रह दिन जिनमें चंद्रमा बढ़ता है। अक्षयतृतीया शुक्ल पक्ष में ही आती है। इसे 'अखाती तीज' भी कहते हैं।

अक्षयतृतीया क्यूँ मनाई जाती है

अक्षयतृतीया हिन्दू धर्म में मनाया जाने वाला बहुत ही पावन पर्व है। सभी हिन्दू इसे बहुत ही हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं।

अक्षयतृतीया के बारे में हिन्दू मान्यताएँ

अखाती तीज के पीछे कई हिन्दू मान्यताएँ हैं। कुछ इसे भगवान विष्णु के जन्म से जोडती हैं, तो कुछ इसे भगवान कृष्ण की लीला से, सभी मान्यताएँ आस्था से जुडी होने के साथ-साथ बहुत रोचक भी हैं।

यह दिन पृथ्वी के रक्षक श्री विष्णुजी को समर्पित है। हिन्दु धर्म की मान्यता के अनुसार विष्णुजी ने श्री परशुराम के रूप में धरती पर अवतार लिया था। इस दिन परशुराम के रूप में विष्णुजी छटवी बार धरती पर अवतरित हुए थे, और इसलिए यह दिन परशुराम के जन्मदिवस के रूप में भी मनाया जाता है। धार्मिक मान्यता के अनुसार विष्णुजी त्रेता एवं द्वापरयुग तक पृथ्वी पर चिरंजीवी (अमर) रहे। परशुराम सप्तऋषि में से एक ऋषि जमदग्नी तथा रेणुका के पुत्र थे। यह

ब्राह्मण कुल में जन्मे और इसीलिए अक्षयतृतीया तथा परशुराम जयंती को सभी हिन्दू बडे धूमधाम से मनाते हैं।

दूसरी मान्यता के अनुसार त्रेतायुग के शुरू होने पर धरती की सबसे पावन माने जाने वाली गंगा नदी इसी दिन स्वर्ग से धरती पर आई। गंगा नदी को धरती पर भगीरथ ने लाये थे। इस पवित्र नदी के धरती पर आने से इस दिन की पवित्रता और बढ जाती है और इसीलिए यह दिन हिंदूओं के पावन पर्व में शामिल है। इस दिन पवित्र गंगा नदी में डुबकी लगाने से मनुष्य के पाप नष्ट हो जाते हैं।

यह दिन रसोई एवं पाक (भोजन) की देवी माँ अन्नपूर्णा का जन्मदिन भी माना जाता है। अक्षयतृतीया के दिन माँ अन्नपूर्णा का भी पूजन किया जाता है और माँ से भंडारे भरपूर रखने का वरदान मांगा जाता है। अन्नपूर्णा के पूजन से रसोई तथा भोजन में स्वाद बढ़ जाता है।

दक्षिण प्रांत में इस दिन की अलग ही मान्यता है। उनके अनुसार इस दिन कुबेर (भगवान के दरबार का खजांची) ने शिवपुरम् नामक जगह पर शिव की आराधना कर उन्हें प्रसन्न किया था। कुबेर की तपस्या से प्रसन्न होकर शिवजी ने कुबेर से वर माँगने को कहा। कुबेर ने अपना धन एवं संपत्ति लक्ष्मीजी से पुनः प्राप्त करने का वरदान माँगा। तभी शंकरजी ने कुबेर को लक्ष्मीजी का पूजन करने की सलाह दी। इसलिए तब से लेकर आज तक अक्षयतृतीया पर लक्ष्मीजी का पूजन किया जाता है। लक्ष्मी विष्णुपत्नी हैं, इसीलिए लक्ष्मीजी के पूजन के पहले भगवान विष्णु की पूजा की जाती है। दक्षिण में इस दिन लक्ष्मी यंत्रम की पूजा की जाती है, जिसमें विष्णु, लक्ष्मीजी के साथ-साथ कुबेर का भी चित्र रहता है।

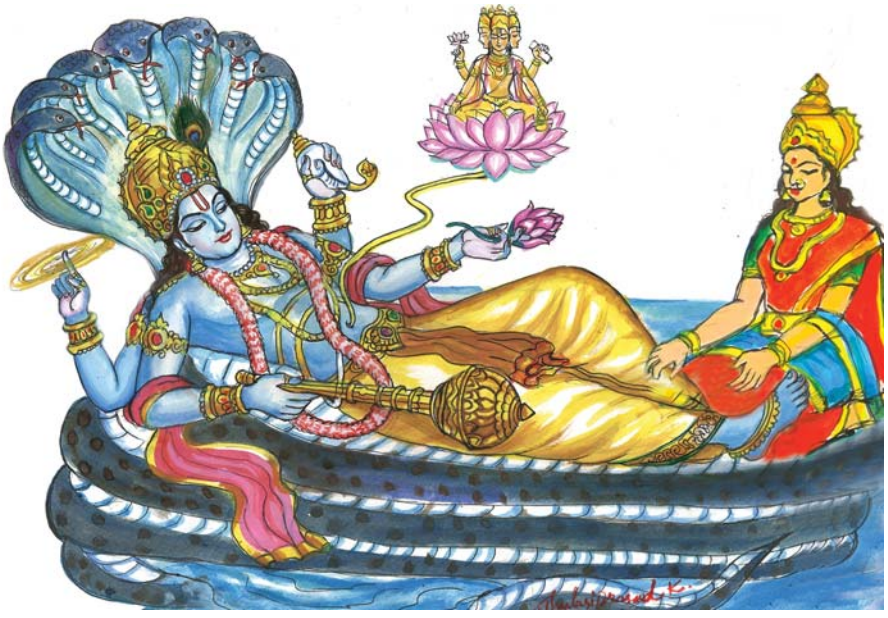

अक्षयतृतीया के दिन ही महर्षि वेदव्यास ने महाभारत लिखना आरंभ की थी। इसी मान्यता के आधार पर इस दिन किए जाने वाले दान का पुण्य भी अक्षय माना जाता है। अर्थात इस दिन मिलने वाला पुण्य कभी खत्म नहीं होता। यह मनुष्य के भाग्य को सालों साल बढ़ाता है।

महाभारत में अक्षयतृतीया की एक और कथा प्रचलित है। इसी दिन दुशासन ने द्रौपदी का चीरहरण किया था। द्रौपदी को इस चीरहरण से बचाने के लिए श्रीकृष्ण ने कभी न खत्म होने वाली साडी का दान किया था।

अक्षयतृतीया के पीछे हिंदूओं की एक और रोचक मान्यता है। जब श्रीकृष्ण ने धरती पर जन्म लिया, तब अक्षयतृतीया के दिन उनके निर्धन मित्र सुदामा, कृष्ण से मिलने पहुँचे। सुदामा के पास कृष्ण को देने के लिए सिर्फ चार चावल के दाने थे, वही सुदामा ने कृष्ण के चरणों में अर्पित कर दिये।

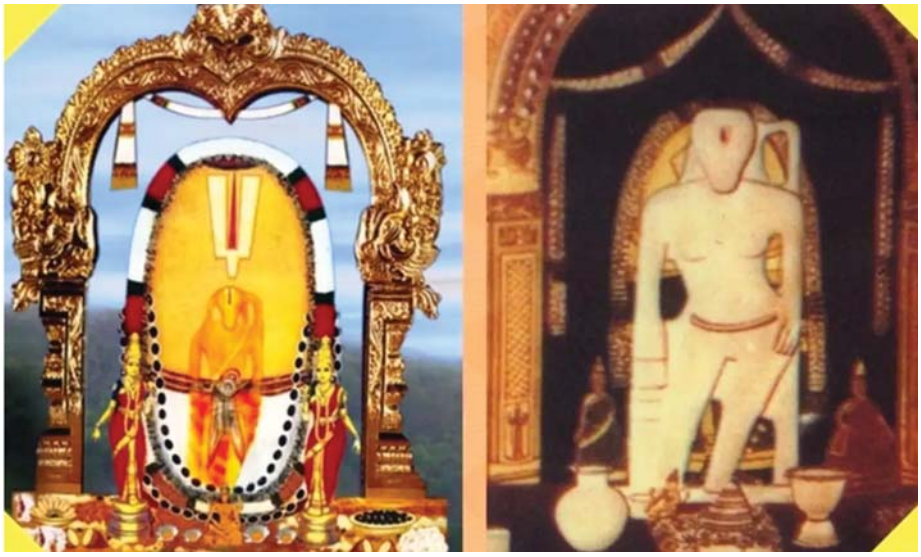

परंतु अपने मित्र एवं सबके हृदय की जानने वाले अंतर्यामी भगवान सब कुछ समझ गए और उन्होंने सुदामा की निर्धनता को दूर करते हुए उसकी झोपड़ी को महल में परिवर्तित कर दिया और उसे सब सुविधाओं से सम्पन्न बना दिया। तब से अक्षयतृतीया पर किए गए दान का महत्व बढ़ गया।

भगवान शंकरजी ने इसी दिन भगवान कुबेर माता लक्ष्मी की पूजा अर्चना करने की सलाह दी थी। जिसके बाद से अक्षयतृतीया के दिन माता लक्ष्मी की पूजा की जाती है और यह परंपरा आज तक चली आ रही है।

आं.प्र., विशाखपट्टणम् जिला, सिंहाचलम् में विराजित भगवान स्वयंभुव श्री भूवराह नारसिंहस्वामी के पवित्र पुण्य क्षेत्र में 'सिंहाचलम्-चंदनोत्सव' उत्सव को अत्यंत वैभव से संपन्न करते हैं। इस दिन माने अक्षयतृतीया के दिन मात्र ही स्वामीजी निजरूप में दर्शन देते हैं। बाकी दिनों में चंदन लेपन करके सभी भक्तों को दर्शन प्राप्त करते है। स्वामी मंदिर के निकट में ही 'कप्प स्तंभम्' है। सभी भक्तगण इस खंभे को आलिंगन करके अपने मनोकामनाएँ पूरा करते हैं।

भारत के उड़ीशा में अक्षयतृतीया का दिन किसानों के लिए शुभ माना जाता है। इस दिन से ही यहाँ के किसान अपने खेत को जोतना शुरू करते हैं। इस दिन उड़ीशा के जगन्नाथपुरी से रथ-यात्रा भी निकाली जाती है।

अलग-अलग प्रांत में इस दिन का अपना अलग ही महत्व है। बंगाल में इस दिन गणेशजी तथा लक्ष्मीजी का पूजन कर सभी व्यापारी द्वारा अपनी लेखा-जोखा की किताब शुरू करने की प्रथा है। इसे यहाँ ''हलखता'' कहते हैं।

पंजाब में भी इस दिन का बहुत महत्व है। इस दिन को नए मौसम के आगाज का सूचक माना जाता है। इस अक्षयतृतीया के दिन जाट परिवार का पुरुष सदस्य ब्रह्म मुहूर्त में अपने खेत की ओर जाते हैं। उस रास्ते में जितने अधिक जानवर एवं पक्षी मिलते है उतना ही फसल तथा बरसात के लिए शुभ शकुन माना जाता है।

अक्षयतृतीया का क्या है महत्व?

अक्षयतृतीया के दिन शुभ कार्य करने का विशेष महत्व है। अक्षयतृतीया के दिन कम से कम एक गरीब को अपने घर बुलाकर सत्कार पूर्वक उन्हें भोजन अवश्य कराना चाहिए। गृहस्थ लोगों के लिए ऐसा करना जरूरी बताया गया है। मान्यता है कि ऐसा करने से उनके घर में धन धान्य में अक्षय बढ़ोतरी होती है। अक्षयतृतीया के पावन अवसर पर हमें धार्मिक कार्यों के लिए अपनी कमाई का कुछ हिस्सा दान करना चाहिए। ऐसा करने से हमारी धन और संपत्ति में कई गुना इजाफा होता है।

जय श्रीमन्नारायण!

❋❋❋

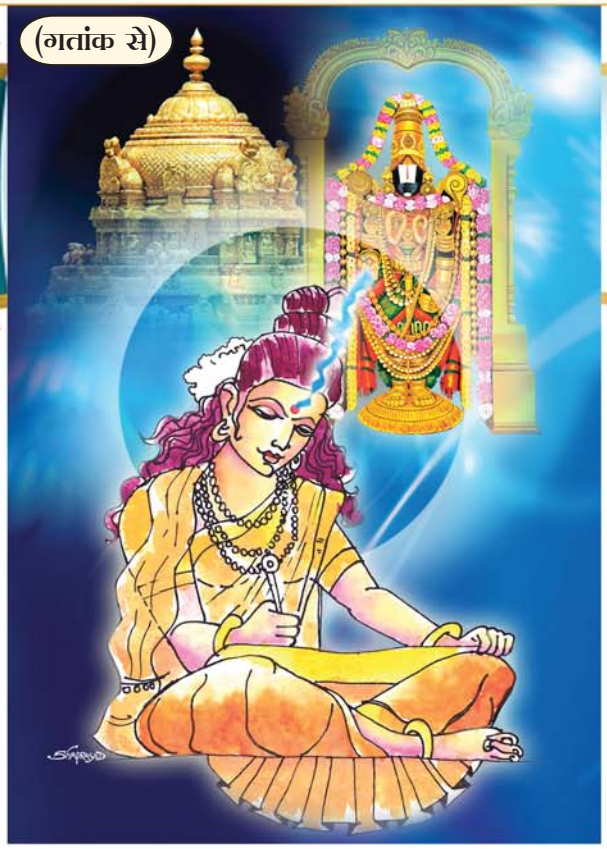

श्री वेंकटाचल की महिमा

(हिंदी गद्यानुवाद)

तृतीय आश्वास

तेलुगु मूल
मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा

हिंदी अनुवाद
आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी

अजपा गायत्री :

इस प्रकार प्रातःकाल से लेकर फिर प्रातःकाल होने तक इक्कीस हजार छे सौ हंस अजपा में होते हैं। ऐसी अजपा गायत्री महामंत्र को गुरु मुख से जान कर, अरुणोदय के समय शुचि के साथ, पद्मासन पर बैठ कर, नासाग्र पर लक्ष्य करके, सप्त कमलादि देवताओं को न्यास, ध्यानपूर्वक अजपा गायत्री महामंत्र को समर्पित करते रहना ही मंत्रयोग है। अब लय योग कौन सा है? सुनो।

लय योग विधान :

विजन स्थल में पद्मासन पर बैठ कर नीचे नासिकाग्र को देखते ऊपर की साधना करते, फिर नासिकाग्र को देखते नीचे की साधना करते हुए दोनों तर्जनियों से दोनों कर्ण द्वारों को, दोनों नासिकाओं से दोनों नासिका द्वारों को बांध कर, सिर को झुका कर एकाग्र मन से बुद्धि से ऊर्ध्व की ओर देखना राधायंत्र मुद्रा है। इस मुद्रा का अभ्यास करने से ब्रह्म रंध्र से प्रणव नाद दशविध ध्वनियों के रूप में सुनाई पडता है। वह ऐसा है कि पहले शिंजिनी गति, दूसरा तरंग घोष, तीसरा घंटारव, चौथा वेणु नाद, पाँचवा वीणा नाद, छठा भेरी ध्वनि, सातवाँ ताल ध्वनि, आठवाँ शंखारव, नवमा मृदंग नाद, दसवाँ मेघनाद कानों में सुनाई पडता है। इस प्रकार क्रम क्रम से नादानुसंधान करने से उस में ये नवनाद लय हो जाते हैं। दसवाँ मेघनाद के समय श्रवण सहित मन से निर्व्यापार के रूप में रोक कर, बाह्य जगत को भूल जाने से वह मानस पवन में लीन हो जाता है। यह नाद लीलानंद का अनुभव ही लययोग है। अब हठयोग कैसा है? सुनो।

हठयोग विधान :

राजा के पालन में सुभिक्ष राज्य में हठयोग मंटप का निर्माण करके उस में रहते हठयोग का अभ्यास करना चाहिए। वह ऐसा है कि सुगंध से भरे फल-पुष्प वन में हवा के न घुसनेवाले सूक्ष्म द्वार मंटप का निर्माण करके प्रतिदिन गोमय से शुद्धि करके उस में रहते हुए, अधिक मात्रा में नमक, इमली, तीखा, कडुवा, कौसलापन वस्तुओं को त्याग करके, तिल के तेल, मांस, मद्य, मीन

पदार्थों को छोड कर, बेर के फल, अधिक पत्तों की सब्जी को, दही, टमाटर, हींग, लहसून आदि तामस पदार्थों को त्याग करके, यव, गेहूँ, शाल्यन्न को, मुद्गसूप, गो घी, चिचिंडा, पोन्नगंटि, चक्रवर्ति आदि पत्तों की सब्जियों, शर्कर, खंड शर्कर आदि सात्विक आहार का ग्रहण करना चाहिए। भोजन करनेवाले अन्न को चार भागों में बांट कर एक भाग को छोड कर, तीन भागों को ईश्वर प्रीति के रूप में खाकर, त्रिफलों को औषधियों के रूप में ग्रहण करते हुए, ब्रात स्नान, उपवास व्रत, स्त्री सांगत्य आदि देह के प्रयासों का त्याग करके इह लोक के सुखों में न गिर कर, शीत-वातों से दूर रहकर योग के षट्कर्मों का आचरण करना चाहिए। वे कौन से है? सुनो।

योग के षट्कर्म :

धोति कर्म, वस्ति कर्म, नेति कर्म, त्राटक कर्म, नौलि कर्म, कपाल भाति कर्म छे षट्कर्म हैं। उन में धोति कर्म कैसा है? सुनो।

1. धोति कर्म :

चौडाई में चार हस्त मृदु वस्त्र, लंबाई में पंद्रह हाथ वस्त्र को स्वच्छ जल में भिगोकर धीरे-धीरे अंदर निगलना चाहिए। ऐसा निगल कर फिर बाद में अतिवेग से बाहर निकाल कर बाद में विंशति हस्त वस्त्र को धीरे-धीरे निगलते हुए फिर बाहर निकालते रहने से दीपन होता है। अपान और पित्त कंठनाल से बाहर निकल जाता है। इस का अभ्यास करने से नेत्र से संबंधित, स्वास से संबंधित, मुख से संबंधित रोग दूर हो जाते हैं।

गुरु के मुख से इस रहस्य को जानकर धोति गजकर्ण नाम से पुकारनेवाले इस कर्म का अभ्यास करना चाहिए। हे हरिजाक्षी! ऐसा करने से वायु सब अपने वश में रहती हैं।

2. वस्ति कर्म :

वस्ति कर्म ऐसा है कि नाभि तक पानी में रहते हुए अधो द्वार में नाली को रखकर कुक्कुटासन पर बैठ कर अपान वायु के द्वारा जल को ऊपर की तरफ खींचना, फिर उसी मार्ग से जल को बाहर निकालना वस्ती कर्म है। इसके अभ्यास से मूल शूल, फोडे, जलोदर, वात-पित्त दोष, नेत्र संबंधी समस्त रोग दूर हो जाते हैं। सप्त धातु, चछुंद्रीय, अंतःकरण शुद्धि, प्रसन्नता, बल आदि इससे प्राप्त होकर सर्व दोष दूर हो जाते हैं।

3. नेति कर्म :

नेति कर्म ऐसा है कि बित्त भर लंबा नाडे को लेकर अमलिन घी में भिगोकर नासिका रंध्र से अंदर खींच कर मुँह से बाहर निकालना नेति कर्म है। इससे कफ साफ होकर दिव्य दृष्टि प्राप्त होगी।

4. त्राटक कर्म :

त्राटक कर्म ऐसा है कि नेत्रों को एकाग्र करके सूक्ष्म रूप को देखते नेत्रों में पानी आने तक रहने से त्राटक कर्म है। इस से नेत्र रोग दूर हो जाते हैं। यह सोने की पेटी की तरह गुप्त रखने की विद्या है।

5. नौली कर्म :

नौली कर्म ऐसा है कि तीव्र वेग से पेट को दाएँ बाएँ फिरोने से अग्नि मांद्य से मुक्त हो जाते हैं। शरीर दीपित होकर पाचन आदि ठीक से हो जाते हैं। जिससे आनंद प्राप्त होता है। यह शरीर के सर्व दोषों को दूर करता है। यह कर्म हठयोग सर्वश्रेष्ठ कर्म है।

6. कपाल भाति कर्म :

कपाल भाति कर्म ऐसा है कि जिस प्रकार लुहार की भट्टी की धौंकनी की तरह हवा भरने के रेचक, पूरक

करना कपाल भाति कर्म है। इससे सारे कफ दोष दूर हो जाते हैं।

इस प्रकार क्रम से धोति, वस्ति, नेति, त्राटक, नौलि, कपाल भाति नामक ये छे कर्म क्रम से अभ्यास करके, रोगों से मुक्त रहने से नाडियाँ वश में रहती हैं। तब सिद्धासन पर बैठ कर रेचक, पूरक, कुंभक के युक्त प्राणायाम पूर्वक षण्मुखीमुद्रा का अभ्यास करते रहना चाहिए। तदूपरांत।

निश्चलानंद सिद्धि :

षुषुम्ना नाडि के लिए जिम्मेदार मूलाधार ब्रह्मरंध्र में एक रंध्र रहता है। उस रंध्र को ही भूतत्व कहा जाता है। इडा, पिंगला नाडियाँ भी मुख्य हैं। इन के कारण ही अमृत का स्रवन होता है। इस अमृत के स्रवन न होने से ही मनुष्य के शरीर को मृत्यु प्राप्त होती है। उस अमृत को रोकने के लिए बाएँ हाथ की योनि स्थान को अच्छी तरह दबा रखकर, गुद

को ऊपर की तरह दबा कर अपान वायु को ऊपर की तरह खींचकर, बलत्कार से ऊर्ध्व की तरफ खींचने से वह मूल बंध होता है। इससे प्राण वायु और नाद बिंदु मिलकर योग सिद्धि प्राप्त होती है। अपान वायु ऊपर की तरफ उठकर अग्नि के साथ मिल जाती है। तब उनकी वृद्धि होती है। तब अग्नि पुरुषापान वायु प्राण वायु को प्राप्त करती है। इस प्रकार देह में पैदा होनेवाली अग्नि अत्यधिक प्रज्वलित होने से उस में सोयी हुई कुंडलिनी शक्ति तप कर जाग जाती है। लाठी से मारे सांप-स्त्री की तरह निश्वास छोडते हुए अच्छी तरह षुषुम्ना द्वार में प्रवेश करता है। फिर शांत होकर ब्रह्म नाडी के बीच में रह जाता है। इस प्रकार के अभ्यास से मूल शक्ति व्याप्त होती है। मध्य शक्ति जाग जाती है। ऊर्ध्व शक्ति का हनन नहीं होता है। वायु मध्य मार्ग से जाती है। इससे अलग मूल भाग व्याकोच होकर नाभि को दबाने से वह कमरबंध हो जाता है। कंठ संकुचित होकर, चुबुक को छाती से दबाने पर वह जलांधर बंध होता है। मूल का व्याकोच होने पर अपान वायु तेजी से उठती है, तब हृदय के अंदर रहनेवाले प्राण उतर कर नाभि के अंदर कुंडलिनी से मिलते हैं। तब संकुचित नाभि को दबाने से प्राणापान से मिल कर साथ साथ चल कर कंठ के पास रोकने से कुंडलिनी ऊर्ध्व की तरफ रेंगती है। वह मध्य बिल में घुस कर चिन्मयत्व को प्राप्त करता है। तब अंतराकाश निश्शब्द बन जाता है। कंठ में प्राणवायु फैल कर सर्व परिपूर्ण भावना प्राप्त होती है। इस प्रकार नाकुंचित कंठ निरोध होने पर अमृत अग्नि में न गिर कर स्वानुभूति बन कर प्राणी को निश्चलानंद प्रदान करता है। इससे अलग।

क्रमशः

नरसिंहावतार और नव नरसिंह क्षेत्र अहोबिल

- प्रो.आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी

''परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्। धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे'' भगवद्गीता के इस श्लोक को भगवान श्रीकृष्ण ने अपने सखा अर्जुन को सुनाया था। परम तत्व परमात्मा के कार्यकारिणी तत्व को तथा समस्त जगत की रक्षा को लेकर श्रीकृष्ण ने अर्जुन को इस के रहस्य के बारे में बताया था। श्री महाविष्णु ही समस्त सृष्टि के रक्षक हैं। समस्त प्राणियों की सुरक्षा, सुव्यवहार, सुखजीवन के लिए वे ही जिम्मेदार हैं। धर्म की स्थापना के लिए सदा वे तत्पर रहते हैं। साथ ही कभी भी धर्म और साधु-संतों को कोई हानि पहुँचती है तो वे तुरंत अवतार लेकर उनकी रक्षा करते हैं। वैष्णव संप्रदाय में इस अवतारवाद का बडा समर्थन किया गया है। वे सर्वांतर्यामी भी हैं। सर्वरक्षक भी।

वैष्णव संप्रदाय अवतारवाद को स्वीकारता है। वैष्णव संप्रदाय के विकास में कई महात्माओं एवं आचार्यों ने अनुपम योगदान दिया है। उन महात्माओं में वैखानस अग्रणी हैं। उन्होंने वैखानस संप्रदाय की स्थापना करके श्री महाविष्णु के तत्व स्वरूप को जन जन तक पहुँचाया है। वैखानस ने श्री महाविष्णु के पांच रूपों की परिकल्पना करके जन जन के मन की भ्रांतियों को दूर किया है। साथ ही लीलावाद और अवतारवाद की स्थापना करके श्री महाविष्णु की महिमा का गायन किया है। वैखानस आगम श्री महाविष्णु और उन के दशावतारों का समर्थन करता है।

वैखानस ऋषि ने वैष्णव संप्रदाय की स्थापना के साथ साथ सर्वाधिपति भगवान विष्णु के रूपों की व्याख्या भी की है। उस शास्त्र को ही वैखानस आगम कहा जाता है।

वैखानस आगम में परमात्मा के रूप में श्री महाविष्णु को प्रतिस्थापित करके उन के अवतारों पर तथा उन के लीलारूपों की महिमा का गायन किया गया है। उस में परमात्मा श्री महाविष्णु के पाँच रूप बताए गए हैं, 1.पर, 2.व्यूह, 3.विभव, 4.अंतर्यामी, 5.अर्चा। वैखानस आगम में इन रूपों की विपुल व्याख्या की गयी है। परमात्मा का पर स्वरूप नित्य वैकुंठ में रहने वाला रूप है। श्रीवैकुंठ के महामणि मंडप में अमित ज्ञानी गरुड, विष्वक्सेन आदि नित्य सूरों से और लीला विभूति से भक्ति, प्रपत्ति आदि उपायों से ब्रह्म पथगामी मुक्त पुरुषों से स्तुत्य होकर शेष तल्प पर श्रीदेवी-भूदेवियों सहित दिव्य मंगल रूप ही श्री महाविष्णु का पर रूप हैं। इस प्रकार पर स्वरूप में परमात्मा सर्वाधिपति वैकुंठवासी विष्णु हैं। परमात्मा का व्यूह स्वरूप विभूति संपन्न रूप है। सृष्टि, स्थिति और लय का कार्यनिर्वहण

के लिए तथा मुमुक्ष उपासक जीवों को अनुग्रह करने के लिए विराजमान स्वरूप है। वैखानस आगम के अनुसार व्यूहा स्वरूप के पुनः पांच भेद हैं--जो विष्णु, पुरुष, सत्य, अच्युत और अनिरुद्ध हैं। पांचरात्र शास्त्रों के अनुसार व्यूहा के चार प्रकार हैं, जो वासुदेव, संकर्षणा, प्रद्युम्न और अनिरुद्ध हैं। इन में संज्ञा भेद के सिवा अर्थभेद नहीं है।

श्री महाविष्णु का विभव स्वरूप परमात्मा की लीलाओं से तथा विविध अवतारों से संबंध रखनेवाला स्वरूप है। साधु संतों की रक्षा, दुष्टों को दंड देने के लिए परमात्मा विभव स्वरूप में विविध अवतार लेते हैं। धर्म की स्थापना इस स्वरूप का मुख्य लक्ष्य है। मत्स्य, कूर्म, वराह, नरसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध और कल्की ये भगवान विष्णु के दस अवतार हैं। इन दसों अवतारों के द्वारा ही श्री महाविष्णु ने अपने समस्त गुण-कर्मों को परिपूर्ण प्रमाणित किया है। इन में कुछ मानव जैसे अवतार हैं तो कुछ मानवेतर। मत्स्य, कूर्म, वराह आदि मानवेतर हैं। तो परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध, कल्कि आदि मानव स्वरूप है। इन में भी विशेष अवतार नारसिंह अवतार है। नर और सिंह दोनों रूपों में इस अवतार में स्वामी को प्रकट होना पडा है। साथ ही इस अवतार का एक वैशिष्ट्य यह है कि स्वामी ने यह प्रमाणित किया है कि भगवान श्री महाविष्णु सर्वांतर्यामी है। अपने भक्त प्रह्लाद की प्रार्थना से स्वामी राज महल के एक खंभे से प्रकट हुए। वह भी नर और सिंह दोनों रूपों में। श्री महाविष्णु की यह अवतार लीला कृत, त्रेता, द्वापर और कलियुग में प्रकट हुई है।

श्री महाविष्णु के परम द्वेषी और उन के परम शत्रु हिरण्यकश्यप के संहार के लिए स्वामी ने नरसिंह

अवतार लिया है। यह अतिभयानक और उग्र अवतार हैं। हिरण्यकश्यप को प्राप्त वरदानों की वजह से स्वामी को इस रूप में प्रकट होना पडा है। हिरण्यकश्यप ने ब्रह्म का तप करके ऐसा वरदान प्राप्त किया कि उसे मानव, देवता, युद्ध के किसी शस्त्र-अस्त्र से, दिन में या रात में, घर में घर के बाहर, धरती-आकाश-पाताल कहीं भी मृत्यु संभव न हो। ब्रह्म से प्राप्त इस वरदान से भक्तजनों को अति उग्र रूप नरसिंह रूप के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। महल के एक खंभे से नरसिंह के रूप में प्रकट होकर हिरण्यकश्यप को प्राप्त समस्त वरदानों को तोडते हुए उस भयंकर राक्षस का श्री महाविष्णु ने संहार करके सज्जनों, साधु, संतों की रक्षा की है। साथ ही यह भी निरूपित किया कि वे सर्वांतर्यामी हैं। पुकारने मात्र से भक्तों की रक्षा के लिए दौडनेवाले भक्तवत्सल हैं। दुष्टों के लिए नरसिंह अवतार अति भयानक और उग्र अवतार है। वही भक्तों के लिए करुणासागर, सभी प्रकार के अभय देनेवाला दयासिंधु है।

नरसिंहावतार का वैशिष्ट्य :

श्री महाविष्णु भक्तवत्सल हैं। अपने भक्तों के वश में वे सदा रहते हैं। सहृदय भक्तों के लिए वे सब कुछ करते हैं। भागवत पुराण में नरसिंहावतार का प्रसंग इस का सठीक प्रमाण प्रस्तुत करता है। श्रीवैकुंठ के द्वारपालक जय और विजय शापग्रस्त होकर हिरण्याक्ष और हिरण्यकश्यप नामक राक्षसों के रूप में पैदा हुए। श्रीहरि ने हिरण्याक्ष का संहार किया। तब से हिरण्यकश्यप श्रीहरि को अपना शत्रु समझने लगा। शत्रुता के साथ साथ उस में श्रीहरि के प्रति द्वेष जाग गया। किसी भी रूप में श्रीहरि से बदला लेने के लिए तथा श्रीहरि से किसी भी प्रकार की हानि न हो, इस के लिए उसने

ब्रह्म को लेकर घोर तप किया। ब्रह्म भगवान से उसने ऐसे विशिष्ट वरदान प्राप्त किए कि किसी भी रूप में उस की मृत्यु संभव न हो। उसने ऐसे वरदान मांगे कि उसे किसी भी मानव से, किसी भी देवता से, किसी भी आयुध से, पानी में, आकाश में, दिन में, रात में, घर में या घर बाहर कहीं भी, किसी भी प्राणी से मृत्यु न हो। ब्रह्म ने ऐसे वरदान उसे दे दिये। तब से हिरण्यकश्यप अधिक उग्र, उद्धंड, अधिक दुष्ट बन कर लोक कंटक बना। किंतु भगवान की लीला कि उस का पुत्र प्रह्लाद परम हरि भक्त निकला। हिरण्यकश्यप नित्य अपने हरिभक्त पुत्र से नित्य वाद-विवाद करता रहा। पुत्र-वात्सल्यता को त्याग करके कई बार उसे मरवाने का प्रयास भी किया। किंतु हरिभक्त प्रह्लाद का वह बाल भी बांका न सका। एक दिन वाद-विवाद करते हिरण्यकश्यप ने अपने पुत्र से तुम श्रीहरि को सर्वांतर्यामी कहते हो तो इस खंभे में अपने भगवान

के दर्शन कराओ, कहा। यही अवसर भगवान नरसिंह के प्रकट होने का सुअवसर बना। तब न दिन था, न राती हो गयी थी, न वह महल के अंदर था न बाहर बल्कि देहलीज के निकट था। स्वामी न मानव के रूप में न सिंह के रूप में न किसी आयुध के साथ प्रकट हुए। बल्कि अतिभयंकर नरसिंह के रूप में प्रकट होकर हिरण्यकश्यप को पक़ड कर अपने घुटनों पर लिटाकर अपनी नुकीली नखों से उस के पेट को छीर कर उस का संहार किया। तब प्रह्लाद आदि भक्तगण ने उन का जय जयकार किया। इस रूप में नर और सिंह रूपी श्री महाविष्णु का यह नरसिंह अवतार एक विशिष्ट अवतार है।

अहोबिल और नव नरसिंह के रूप :

श्री महाविष्णु के अवतारों में राम और कृष्ण अवतारों के बाद अधिक पूजित होनेवाला अवतार नरसिंह अवतार है। समेकित आंध्र प्रदेश में नरसिंह स्वामी के नव क्षेत्र अत्यंत प्रचलित हैं। वे हैं अहोबिल, यादगिरि गुट्ट, माल कोंड, सिंहाचलम, धर्मपुरि, वेदाद्री, अंतर्वेदी, मंगलगिरि, पेंचल कोना। ये नव नरसिंह क्षेत्र अतिप्राचीन व अत्यंत प्रचलित क्षेत्र हैं। इन में से अहोबिल क्षेत्र अति पवित्र पुण्य क्षेत्र भी है। 108 वैष्णव क्षेत्रों में इस की गिनती होती है। श्रीवैष्णवों के लिए यह परम पवित्र तीर्थ क्षेत्र है। यह आं.प्र. के नंद्याल जिले के आल्लगड्डा प्रदेश में बृहद नल्लमला गिरि-कानन में बसा अति सुंदर प्रदेश भी है। स्थल पुराण से स्पष्ट होता है कि इसी प्रदेश में श्री महाविष्णु ने नरसिंह का अवतार लेकर हिरण्यकश्यप का वध किया था। इस के कई प्रमाण इस क्षेत्र में प्राप्त होते हैं। विशेष बात यह है कि इस प्रदेश में नव नरसिंह की मूर्तियाँ पायी जाती हैं। स्थल पुराण के अनुसार जब नरसिंह स्वामी प्रकट हुए तब देवतागण ने इस रूप में कीर्तन किया था--

अहोवीर्य अहो शौर्य अहो बहुपराक्रमः।
नारसिंह परः दैवम अहोबिलः अहोबिलः।।

तब से इस क्षेत्र का नाम अहोबिल पडा, ऐसी मान्यता है। अहोबिल क्षेत्र दो प्रकार विभाजित है। 'ऊपरी अहोबिल' (एगुव अहोबिल); दूसरा 'निचला अहोबिल' (दिगुव अहोबिल)। नल्लमला के घने जंगल में यह दिव्य क्षेत्र है। भक्तगण सर्वप्रथम निचले अहोबिल क्षेत्र के स्वामी के दर्शन करते हैं। मान्यता है कि श्री वेंकटेश्वर स्वामी ने प्रह्लाद वरद इस नरसिंह स्वामी की मूर्ति की प्रतिष्ठा की थी। उस के बाद पथरीले घने जंगल में आठ किलोमीटर की ऊंचाई पर एक गुफा में स्थित ऊपरी नरसिंह स्वामी के दर्शन करते हैं। फिर इस स्वामी के दर्शन करने के उपरांत इस क्षेत्र में विशेष रूप से प्रतिष्ठित नव नरसिंह स्वामी की मूर्तियों के दर्शन करके अपने जीवन को धन्य बनाते हैं।

क्रमशः

मार्च-2024 महीने का क्विज-20 के समाधान

1) माता लक्ष्मी देवी,

2) करवीर वासिनी; अंबाबाई,

3) श्री पद्मावती देवी, 4) माँ लक्ष्मी,

5) भगवान परमेश्वर, 6) पुनर्जन्म से मुक्ति,

7) होलिका, 8) प्रह्लाद,

9) द्रोणाचाय, 10) उत्तरा,

11) परीक्षित, 12) भगवान शिव,

13) श्री कपिलेश्वरस्वामी,

14) उत्तरा, 15) भगवान शिव.

(गतांक से)

श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108

- श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया

3. तोण्डै नाडु दिव्य क्षेत्र

51) तिरुक्कारवाणम् - (कांचीपुरम)

पेरिय कांचीपुरम में ऊरहम - उलहळन्द पेरुमाल कोयिल में ही - पश्चिम प्राकार में इनकी सन्निधि है।

मूलमूर्ति - कारवान्नर। (कळवर) पश्चिमाभिमुखी। खडे दर्शन देते हैं।

तायार (माताजी) - कमलवल्लि (तामरैयाळ)।

तीर्थ - गौरीतटाक (तरातर तीर्थ)।

विमान - पुष्कल विमान।

प्रत्यक्ष - गौरि - पार्वती।

(इसका कोई विवरण उपलब्ध नहीं है कि यह दिव्य क्षेत्र पहले कहां रहा।)

मंगलाशासन - 1 आल्वार; 1 दिव्य पद।

52) तिरुप्पाडहम् - (कांचीपुरम)

तिरुप्पाडहम् मंदिर तिरुनीरहम - उलहळन्द पेरुमाल कोयिल से लगभग 1 कि.मी. दूरी पर गंगै कोंडान् मंडप के समीप है।

मूलमूर्ति - पाण्डव दूतर। पूर्वाभिमुखी, आसीनस्थ दर्शन देतें। (विश्वरूप)।

तायार (माताजी) - रुक्मिणी, सत्यभामा।

तीर्थ - मत्स्य तीर्थ।

विमान - चक्र विमान, वेद कोटि विमान।

प्रत्यक्ष - जनमेजयन - हारीत मुनि।

पुराणों में इसका उल्लेख है कि जनमेजय महाराज की प्रार्थना के अनुसार उनको दर्शन दिए। कृष्ण जयंती-वैकुंठ एकादशी मुख्य उत्सव। श्री अरुळाळप् पेरुमाळ एम्पेरुमानार सन्निधि है।

मंगलाशासन - 4 आल्वार; 6 दिव्य पद।

53) तिरु निलात्तिङ्गल तुण्डम - (कांचीपुरम)

पेरिय कांचीपुरम के एकांबरेश्वर मंदिर के अन्दर के प्राकार (दाईं ओर) में एक छोटी सन्निधि है - जहाँ विराजमान हैं।

मूलमूर्ति - निलात्तिङ्गळ तुण्डत्तान - चन्द्र चूडप् पेरुमाल, पश्चिमाभिमुखी, खडे दर्शन देते हैं।

तायार (माताजी) - नेर ओरुवरिल्ला वल्लि, निलात्तिङ्गल तुण्डत्तायार।

तीर्थ - चन्द्र पुष्करिणी - (अब पुष्करिणी नहीं हैं।)।

विमान - पुरुष सूक्त विमान, (सूर्य विमान)।

प्रत्यक्ष - शिवजी।

कहा जाता है कि यहाँ एक आम्र पेड के नीचे पार्वती ने तपस्या की।

मंगलाशासन - 1 आल्वार; 1 दिव्य पद। (यहाँ वैष्णव पद्धति के अनुसार पूजा नहीं की पाती है)।

क्रमशः

जून 2024

- 01 श्री हनुमज्जयंती
- 17-21 तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का प्लवोत्सव
- 17-25 अप्पलायगुंटा श्री प्रसन्नवेंकटेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव
- 19-21 तिरुमल श्री बालाजी का ज्येष्ठाभिषेक
- 27-29 तिरुचानूर श्री सुंदरराजस्वामीजी का अवतारोत्सव

कनकधारास्तवम्

जगद्गुरु श्री आदिशंकराचार्यजी से विरचित एक सर्वोत्कृष्ट स्तोत्रराज 'कनकधारास्तोत्र'। यह माँ लक्ष्मी को स्तुतिगान करनेवाली एक शक्तिमान व महिमान्वित स्तोत्र है। आर्थिक पीडा व कष्टों से विमोचन के लिए यह एक स्तोत्रराज है। सर्वकाल सर्वावस्था में सभी लोग यह स्तोत्र कर सकते हैं। इतना महिमान्वित स्तोत्र सप्तगिरि पाठकों के लिए...

अंगं हरेः पुलकभूषणमाश्रयंती
भृंगांगनेव मुकुलाभरणं तमालम्,
अंगीकृताखिलविभूतिरपांगलीला
मांगल्यदास्तु मम मंगलदेवतायाः। ॥ 1 ॥

भावार्थ - कलियों से सुशोभित हुआ करंज वृक्ष पर, मादा भ्रमर आश्रित हुआ जैसा, श्री महाविष्णु के वक्षःस्थल पर मंगलदेवता श्री महालक्ष्मी आश्रित हुई है। श्री महाविष्णु के वक्षःस्थल ही श्री महालक्ष्मी देवी का निवास स्थल। ऐसे समस्त अष्टैश्वर्यों के और समस्त जगत् की जगज्जननी की करुणा दृष्टी अपने पर पूर्ण रूप से प्रसार होकर मुझे समस्त शुभ प्रदान करें।

मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः
प्रेमत्रपाप्रणिहितानि गतागतानि,
मालादृशोर्मधुकरीव महोत्पले या
सा मे श्रियं दिशतु सागरसंभवायाः। ॥ 2 ॥

भावार्थ - जिस प्रकार काले कुमुद पुष्प पर, मादा भ्रमर बहुत प्रीति से बैठता है। उसी प्रकार श्री महालक्ष्मी जी अपने सुंदर कमलनयनों से, अत्यंत मुग्ध मनोहर कुमुद फूल रूपी अपने नाथ श्रीमन्नारायण को आकर्षित होकर उनको देखने की तृष्ण पल-पल बढती जारही है। जब अपने नाथ उन्हें देखते हैं तब शर्म से अपने नजर पीछे मोड लेती हैं। इस प्रकार सखी - अपने नाथ से नयनों का प्रणय प्रेम लीं हो जाती हैं। ऐसे कमल पुष्प जैसे नजर मुझ पर सदा प्रसारित होकर मुझे समस्त अष्टैश्वर्य प्रदान करें।

विश्वामरेंद्रपदविभ्रमदानदक्ष
मानंदहेतुरधिकं मुरविद्विषोऽपि,
ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्थ
मिंदीवरोदरसहोदरमिन्दिरायाः। ॥ 3 ॥

भावार्थ - जिस प्रकार काले कुमुद पुष्प के अंतर भाग में चमकीला काला तारा की प्रकार श्री महालक्ष्मी जी के आकर्षित आँखों के तारे समस्त स्वर्ग साम्राज्य रूपी अलौखिक संपत्ति को अपने भक्तों को प्रदान करने की अद्भुत महिमामयी शक्ति है। यही नजर (अखिलांडकोटि ब्रह्मांड नायक) मुरांतक संहारक समस्त लोकों के अधिपति को भी अत्यधिक प्रसन्न प्रदान करती है। ऐसी इंदिरा देवी की पुष्पित हुए कमल नयन, मुझ पर क्षण काल भर प्रसारित करें, जिस से मेरा जन्म धन्य हो।

आमीलिताक्षमधिगम्य मुदा मुकुंद
मानन्दकंदमनिमेषमनंगतंत्रम्,
आकेकरस्थितकनीनिकपक्ष्मनेत्रं
भूत्यै भवेन्मम भुजङ्गशयाङ्गनायाः। ॥ 4 ॥

भावार्थ - श्रीमन्नारायणजी, अपने नयनों के पलकों से थोडा बंद कर, समस्त जन को आनंद प्रदान कर रहे हैं। ऐसे अपने स्वामी पर रमादेवी अत्यंत प्रीति से, बिना पलक हिलाए नजर रखी है। वह अपने नाथ को बिना देखे, पल भर के वियोग को भी न सहन कर पाती है। अपने प्रियतम के प्रेम में तल्लीन होकर अर्ध बंधित पलकों से अपने स्वामी को शर्माति हुई देख रही है। ऐसी नेत्र दृष्टी मुझे समस्त संपत्तियों को प्रदान करें।

कालाम्बुदालिललितोरसि कैटभारे
र्धाराधरे स्फुरति या तटिदङ्गनेव,
मातुस्समस्तजगतां महनीयमूर्तिः
भद्राणि मे दिशतु भार्गवनंदनायाः। ॥ 5 ॥

भावार्थ - बादल में बिलजी की लता में सृजन हुए समान, वर्षा के अंधेरे के समान काले शरीर वाले श्री महाविष्णु के वक्षःस्थल पर जगज्जननी का रूप सौंदर्य अद्वितीय प्रकाशित रूप से चमक रहा है। उस श्री महालक्ष्मी का स्वरूप मुझे हर प्रकार के शुभ प्रदान करें। जिस से मेरा जीवन धन्य हो जाए।

बाह्वन्तरे मधुजितः श्रितकौस्तुभे या
हारावलीव हरिनीलमयी विभाति,
कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला
कल्याणमावहतु मे कमलालयायाः। ॥ 6 ॥

भावार्थ - जिस जगज्जननी के कमल नयनों के नजरों से कौस्तुभमणि को धारण किया हुआ, पांच सिरों वाला मुरासुर का संहार किया हुआ, श्री महाविष्णु के वक्षःस्थल पर, इंद्र नील मणिहारों से शोभायमान रूप से निरंतर प्रकाशित होने वाले श्रीमन्नारायण की करुणाकटाक्ष मुझे रक्षा करें। जिस से मेरे जीवन को मोक्ष प्राप्त हो जाए।

प्राप्तं पदं प्रथमतः खलु यत्प्रभावा
मांगल्यभाजि मधुमाथिनि मन्मथेन,
मय्यापतेत्तदिह मंथरमीक्षणार्धं
मंदालसं च मकरालयकन्यकायाः। ॥ 7 ॥

भावार्थ - श्री महालक्ष्मी की कटाक्षवीक्षण से मधुवन नामक राक्षस का निर्मूलन कर, श्रीमन्नारायण समस्त सन्मंगल कार्यों के लिए सुप्रसिद्ध है। ऐसी देवी के अनुराग भरित दृष्टी से कामवश से जगत रक्षण कार्य को ठीक प्रकार से निर्वाहन कर रहा है। अर्थात् शिष्टजनों की रक्षा-दुष्ट जनों का संहार करता हुआ, जगत् की रक्षा कर रहा है। ऐसे शांत मूर्ति की नजर सदा मुझ पर प्रसारित रहे, जिस से मेरा जन्म सफल हो जाए।

दद्याद्दयानुपवनो द्रविणांबुधारा,
मस्मिन्न किंचन विहंगशिशौ विषण्णे,
दुष्कर्मघर्ममपनीय चिराय दूरं
नारायणप्रणयिनीनयनाम्बुवाहः। ॥ 8 ॥

भावार्थ - जिस प्रकार चातक पक्षी (पपीह) का बच्चा गर्मी के मौसम में धूप से विचलित होकर प्यास से तड़प रहा है। ऐसी अवस्था में श्री महाविष्णु उस शिशु पक्षी को गर्मी से बचने के लिए, वायु को प्रेरित कर मेघ से वर्षा बरसाकर उसकी प्यास को मिटाकर संतुष्ट किया है। उसी प्रकार श्रीमन्नारायण मूर्ति अपनी प्रेमिका इंदिरा देवी की करुणा रूपी पवन से धन नामक वर्षा बरसाकर दुष्कर्म नामक गर्मी से समस्त प्राणियों की गर्मी को दूरकर अनंत धन-धान्य प्रदान करें। जिस से अपने सारे कष्ट, समस्याएँ और बाधाएँ दूर हो जाए।

इष्टाविशिष्टमतयोऽपि यया दयार्द्र
दृष्ट्या त्रिविष्टपपदं सुलभं लभन्ते,
दृष्टिः प्रहृष्टकमलोदरदीप्तिरिष्टाम्
पुष्टिं कृषीष्ट मम पुष्करविष्टरायाः। ॥ 9 ॥

भावार्थ - स्वर्गलोक सुख प्रदान करने वाले यज्ञ-याग जैसे कर्म करने की इच्छा मन में न होने पर भी, श्री महादेवी की दृष्टी अपने ऊपर प्रसारित होते ही, मनुष्य बिना यज्ञ-याग से स्वर्ग पद को सुलभता से प्राप्त कर रहे हैं। ऐसी पद्म गर्भ की तेज प्रकाश वाली श्री महालक्ष्मी जी की नजर हम पर प्रसारित हो तो बिना प्रयास मुझे ऐश्वर्य प्राप्त होगा।

गीर्देवतेति गरुडध्वजसुन्दरीति
शाकंभरीति शशिशेखरवल्लभेति,
सृष्टिस्थितिप्रलयकेलिषु संस्थितायै
तस्यै नमस्त्रिभुवनैकगुरोस्तरुण्यै। ॥ 10 ॥

भावार्थ - सर्व लोकों के सृजन करते समय, ब्रह्म की पत्नी 'भारती' कहकर, शिष्ट रक्षण करते समय, नारायण की पत्नी 'नारायणी' कह कर, त्रिकाल स्वरूपिणी अर्थात् समस्त लोकों को चलते समय, 'शकांभरि' कह कर, प्रलयकाल के समय 'शंबुरानी गौरी' कह कर, समस्त लोकों को शासन करने वाली लोकपावनी श्री महालक्ष्मी को प्रणाम कर रहा हूँ।

श्रुत्यै नमोऽस्तु शुभकर्मफलप्रसूत्यै
रत्यै नमोऽस्तु रमणीयगुणार्णवायै,
शक्त्यै नमोऽस्तु शतपत्रनिकेतनायै
पुष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तमवल्लभायै। ॥ 11 ॥

भावार्थ - यज्ञ यागादि पुण्य कर्मों के लिए प्रयोजन प्रदान करने वाली वेदस्वरूपिणी श्री महालक्ष्मी को मेरा नमस्कार। भक्तों के प्रति वात्सल्य, दयामयी, सौशील्यादी विशाल सागर जैसी सद्गुणी, आनंदस्वरूपिणी श्री महालक्ष्मी को मैं अपने करकमलों को जोडकर नमस्कार कर रहा हूँ। कमल पुष्प में रही शक्ति स्वरूपिणी इंदिरादेवी को अभिवंदन। परम पुरुष श्री महाविष्णु की प्रेमिका सर्वोत्कृष्ट भार्गवी को प्रणाम।

नमोऽस्तु नालीकनिभाननायै
नमोऽस्तु दुग्धोदधिजन्मभूम्यै,
नमोऽस्तु सोमामृतसोदरायै
नमोऽस्तु नारायणवल्लभायै। ॥ 12 ॥

भावार्थ - श्री महालक्ष्मी कमल पुष्प जैसी मुख वाली है। क्षीरसागर में चंद्र और अमृत के साथ जन्म हुई है। इसलिए उन्हें चंद्र की बहन कहते हैं। वह श्रीमन्नारायण की प्रेमिका है। ऐसी जगज्जननी को मेरा सविनय नमस्कार।

दारिद्र्य विमोचन स्तोत्र में लक्ष्मी देवी को पद्मा, पद्मलया, पद्मप्रिया, पद्महस्ता, पद्माक्षी, पद्मसुंदरी, पद्मोद्भवी, पद्ममुखी, पद्ममालाधरा, पद्मिनी, पद्मगंधिनी कह कर यशोगान किया गया है। उनके मुख को कमल पुष्प के समान कहने के कारण, शैत्यसौरभ्य के लिए समुचित स्थान कहकर वर्णन किया गया है। चंद्र की बहन कहने के कारण, परमानंद के लिए परमोत्तम चिह्न कहकर, अमृत के साथ जन्म होने के कारण, अमृत की बहन कहकर, कहा जाता है। ऐसी माताजी की सेवा जितना भी करें, मन चाहता हैं की और सेवा करूँ। उनका जन्म जहाँ हुआ है उस स्थान को रत्नाकरम कहने के कारण वह आदिगर्भेश्वरीत्व कहकर प्रशंसा की गयी है।

नमोऽस्तु हेमाम्बुजपीठिकायै
नमोऽस्तु भूमण्डलनायिकायै,
नमोऽस्तु देवादिदयापरायै
नमोऽस्तु शार्ङ्गायुधवल्लभायै। ॥ 13 ॥

भावार्थ - स्वर्ण कमल सिंहासन आसीन हुई श्री महालक्ष्मी जी को वंदन। भूलोकनायिका महादेवी को नमस्कार। साधु-संतों और देवताओं पर दया रखने वाली वात्सल्य मूर्ति माता जी को सविनम्र नमस्कार। नमोनमामी शारंग धनुर्धारी विष्णुदेव की प्रेमिका श्री लक्ष्मी जी को नमोनमामी।

नमोऽस्तु देव्यै भृगुनंदनायै
नमोऽस्तु विष्णोरुरसिस्थितायै,
नमोऽस्तु लक्ष्म्यै कमलालयायै
नमोऽस्तु दामोदरवल्लभायै। ॥ 14 ॥

भावार्थ - भृगु महर्षि की पुत्रिका, श्री महाविष्णु के वक्षःस्थल पर विराजमान, कमल पुष्प पर आसीन हुई, यशोदा देवी से रोकली को बांधा गया केशव की प्यारी सखी श्री महालक्ष्मी को वंदन समर्पित कर रहा हूँ।

नमोऽस्तु कान्त्यै कमलेक्षणायै
नमोऽस्तु भूत्यै भुवनप्रसूत्यै,
नमोऽस्तु देवादिभिरर्चितायै
नमोऽस्तु नंदात्मजवल्लभायै। ॥ 15 ॥

भावार्थ - कमल दल रूपी नयनों की तेजोस्वरूपिणी माता, समस्तलोकों की माता, संपदाओं की माँ, देवताओं से पूजित और नंद महाराज का पुत्र श्रीकृष्ण की प्रेमिका श्री महालक्ष्मी जी को नमोनमः।

संपत्कराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि
साम्राज्यदानविभवानि सरोरुहाक्षि,
त्वद्वंदनानि दुरिताहरणोद्यतानि
मामेव मातरनिशं कलयंतु मान्ये। ॥ 16 ॥

भावार्थ - कमल पुष्प के पत्तों जैसे आँखों वाली माताजी! तुझे मेरा नमस्कार। तुझे नमस्कार करने पर समस्त संपत्तियाँ प्राप्त होते हैं। पंचेंद्रिय भी सहर्षित होते हैं। समस्त साम्राज्य वैभव प्राप्त होते हैं। समस्त पाप निश्शेष अंत होते हैं। परम पूज्य माताजी! आपके चरणों को वंदन समर्पित कर, मैं अपने आप कृतार्थ बन जाता हूँ।

यत्कटाक्षसमुपासनाविधिः
सेवकस्य सकलार्थसंपदः,
सन्तनोति वचनांगमानसै
स्त्वां मुरारिहृदयेश्वरीं भजे। ॥ 17 ॥

भावार्थ - अम्मा! श्री महालक्ष्मी! मेरी प्रार्थना करने वालों को तेरे कृपाकटाक्ष नजरे सदा संप्राप्त होते रहते हैं। श्रीहरि के प्राणों की प्यारी माता! तुझे त्रिकरणशुद्धि से सेवा कर रहा हूँ। मुझे अनुग्रहित करें अर्थात् - मोक्ष प्रदान करों।

सरसिजनिलये सरोजहस्ते
धवलतमांशुकगंधमाल्यशोभे,
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे
त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम्। ॥ 18 ॥

भावार्थ - कमल पुष्प रेखाओं के समान आँखों वाली, कर में कमल कलि को धारण की हुई, सुद्ध सफेद वस्त्र पहनी हुई, गले में चंदन माला से विराजमान हुई, समस्त जगत् को आकर्षित करनेवाली मनोहर रूपी महाशक्तिशाली, अखंड ज्ञान, ऐश्वर्य व वीर पराक्रम शक्ति से सम्मेलित गुणवती, रूपवती, शीलवती और अतिलोक सौंदर्य राशी, श्रीमन्नारायण की अर्धांगिनी, जीवन सहचरी भक्तों को समस्त अष्टैश्वर्य प्रदान करने वाली हे श्री महालक्ष्मी माता! मुझ पर दया करों।

दिग्घस्तिभिः कनककुंभमुखावसृष्ट
स्वर्वाहिनीविमलचारुजलप्लुतांगीम्,
प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेष
लोकाधिनाथगृहिणीममृताब्धिपुत्रीम्। ॥ 19 ॥

भावार्थ - ऐरावतादी दिग्गज आकाश गंगा जल को स्वर्ण कलश में लाकर अपने सूँडों से अभिषेक करती हुई, भीगी देह वाली समस्त जगत् की जननी रक्षिका, समस्त लोकों के प्रभु श्री महाविष्णु की धर्म-पत्नी, क्षीर सागर की पुत्रिका श्री महालक्ष्मी जी को प्रातःकाल ही प्रणाम कर रहा हूँ।

कमले कमलाक्षवल्लभे त्वं
करुणापूरतरंगितैरपांगैः,
अवलोकय मामकिंचनानां
प्रथमं पात्रमकृत्रिमं दयायाः। ॥ 20 ॥

भावार्थ - कमल पुष्प के पत्रों जैसी आँखों वाली श्रीमन्नारायण मूर्ति की सखी हे कमलान्बिका! मेरी विनम्र सुनिए। मैं दरिद्रों में अग्रगण्य हूँ। आपकी कृपा के लिए योग्यवान हूँ। ऐसे तुम्हारे भक्त के प्रति दया रखकर आपके करुणाकटाक्ष मुझ पर प्रसार करें।

स्तुवंति ये स्तुतिभिरमूभिरन्वहं
त्रयीमयीं त्रिभुवनमातरं रमाम्,
गुणाधिका गुरुतरभाग्यभाजिनो
भवंति ते भुवि बुधभाविताशयाः। ॥ 21 ॥

कौन हर दिन वेद स्वरूपिणी श्री महालक्ष्मी के चरण कमलों को इस स्तोत्र से प्रशंसा करते हैं... वे अधिक सुसंपन्न, परम भाग्यवान होकर इस धरति में पंडितों की प्रशंसा के पात्र हो सकते हैं।

सुवर्णधारास्तोत्रं यच्छंकराचार्य निर्मितम्,
त्रिसंध्यं यः पठेन्नित्यं स कुबेरसमो भवेत्। ॥ 22 ॥

भावार्थ - कौन श्री शंकरभगवत्पादाचार्यजी से लिखा गया इस कनकधारा स्त्रोत्र को प्रातःकाल, दोपहर और संध्या समय पढेगा, वह अवश्य 'नौ निधियों' (नौ खजानों) का नायक कुबेर के समान धनवान बन सकता है।

गद्यम्

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य वर्यस्य श्रीमच्छंकर भगवतः कृतिषु कनकधारास्तोत्रं संपूर्णम्।

संपद्युक्त, परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्री शंकर भगवत्पादजी से लिखे यह कनकधारास्तोत्रम् समाप्त हुआ है। भाषोध्यारक श्री वाविल्लजी से प्रचुरित हुआ कनकधारास्तवम् में - तालपत्र में लिखित ग्रंथों से लेकर प्रचुरित हुए अधिकपाठ श्लोक निम्न प्रकार है -

बिल्वाटवीमध्यलसत्सरोजे
सहस्त्रपत्रे सुखसन्निविष्टाम्,
अष्टापदांभोरुहपाणिपद्माम्
सुवर्णवर्णां प्रणमामि लक्ष्मीम्। ॥ 1 ॥

भावार्थ - बिल्व वन के बीच में, सहस्र दल शोभित कमल पुष्प में विराजमान हुई, स्वर्ण कमल को धारण की हुई, स्वर्णमयी तेजो देहरूपी माता रमादेवी को मेरा सविनम्र नमस्कार।

कमलासनपाणिना ललाटे
लिखितामक्षरपंक्तिमस्य जन्तोः,
परिमार्जय मातरंघ्रिणा ते
धनिकद्वारनिवास दुःखदोग्धीम्। ॥ 2 ॥

भावार्थ - माता! धनि लोगों के द्वारा पर खड़े होकर भीख मांगते हुए, उसी पैसों से जीवन बिताने के लिए, इस प्राणी के ललाट पर ब्रह्म से लिखित रेखा को आपके पैरों से मिटाकर मेरा जीवन का उद्धार कीजिए।

अंभोरुहं जन्मगृहं भवत्या
वक्षःस्थलं भर्तृगृहं मुरारेः,
कारुण्यतः कल्पय पद्मवासे
लीलागृहं मे हृदयारविंदम्। ॥ 3 ॥

भावार्थ - माता! आपका जन्म स्थान (मायके) कमल पुष्प है। ससुराल वास श्रीमन्नारायण का वक्षःस्थल है उसी प्रकार मुझ पर दया रख कर मेरे हृदय पद्म को क्रीडा गृह मानकर सदा मेरे हृदय में वास कीजिए।

कूर्मावतार

- डॉ.एच.एन.गौरीराव

जब कभी जगत में अधर्म फैलता है और सज्जनों की हानि होती है, तब विश्व कल्याण के लिए तथा धर्म की पुनःस्थापना के लिए भगवान विष्णु अवतार लेते हैं। कूर्मावतार भी लोक कल्याण के लिए हुआ था। कूर्मावतार भगवान विष्णु के सब अवतारों से भिन्न है। विष्णु जी ने इस अवतार में प्रत्यक्ष रूप से राक्षस संहार नहीं करने पर भी देव तथा मानवों के लिए कल्याण प्रदान किया है।

नृसिंह पुराण के अनुसार कूर्मावतार भगवान विष्णु के दस अवतारों में से दूसरा अवतार है, और वही भागवत पुराण के अनुसार चौबीस अवतारों में से ग्यारहवा अवतार है। इन दो पुराणों के अलावा कूर्मावतार के बारे में पद्म पुराण, लिंग पुराण, कूर्म पुराण और महाभारत आदि धार्मिक ग्रंथों में उल्लेख मिलता है। कूर्म पुराण में स्वयं भगवान कूर्मावतार के बारे में विवरण देते हैं। इस पुराण में भगवान कूर्म ने इन्द्रद्युम्न को चतुर्विध पुरुषार्थों के महत्व का उपदेश दिया है।

कूर्मावतार की कथा :

कूर्मावतार सत्य युग में हुआ था। कूर्म अवतार की कथा इस प्रकार है -

एक बार शंकर महादेव के अंश माने जाने वाले, क्रोधी स्वभाव वाले महर्षि दुर्वास देवलोक जा रहे थे, उसी समय वे देवलोक में ऐरावत पर विचरण करनेवाले देवेंद्र से मिलते है। इंद्र को देखकर दुर्वासमुनि सम्मानपूर्वक अपने गले की पुष्पमाला को भेंट के रूप में देते हैं। अहंकारवश इंद्र उस पुष्पमाला को ऐरावत के गले में डालते हैं। ऐरावत उस माला को अपने पैरों के नीचे डालकर कुचल देता है। इस व्यवहार को अपना अपमान समझकर कुपित दुर्वास मुनि इंद्र को श्रीहीन होने का शाप देते हैं। इस शाप के प्रभाव से अमरेंद्र समेत देवतागण धनहीन तथा शक्तिहीन हो जाते हैं। दैवीय शक्ति की क्षति तथा वैभव हीनता को देखकर दानव उन पर आक्रमण करके, उनको हराकर स्वर्ग पर अपना आधिपत्य स्थापित करते हैं। अपनी शक्ति के बल पर राजा बलि तीनों लोकों पर राज करते है। दानवों के शासन में सर्वत्र आतंक मच जाता है। दानव देवताओं पर अत्याचार करने लगते है। इन्द्र समेत देवतागण उनसे भयभीत हो जाते हैं। आतंकित सब देवता मिलकर वैकुंठनाथ भगवान विष्णु के पास पहुँचते हैं। वे विष्णुजी की स्तुति करके अपनी करुणाजनक कहानी सुनाकर दानवों से बचाकर फिर से स्वर्ग को दिलाने की प्रार्थना करते हैं। भगवान विष्णु उनसे समुद्र मंथन करने की

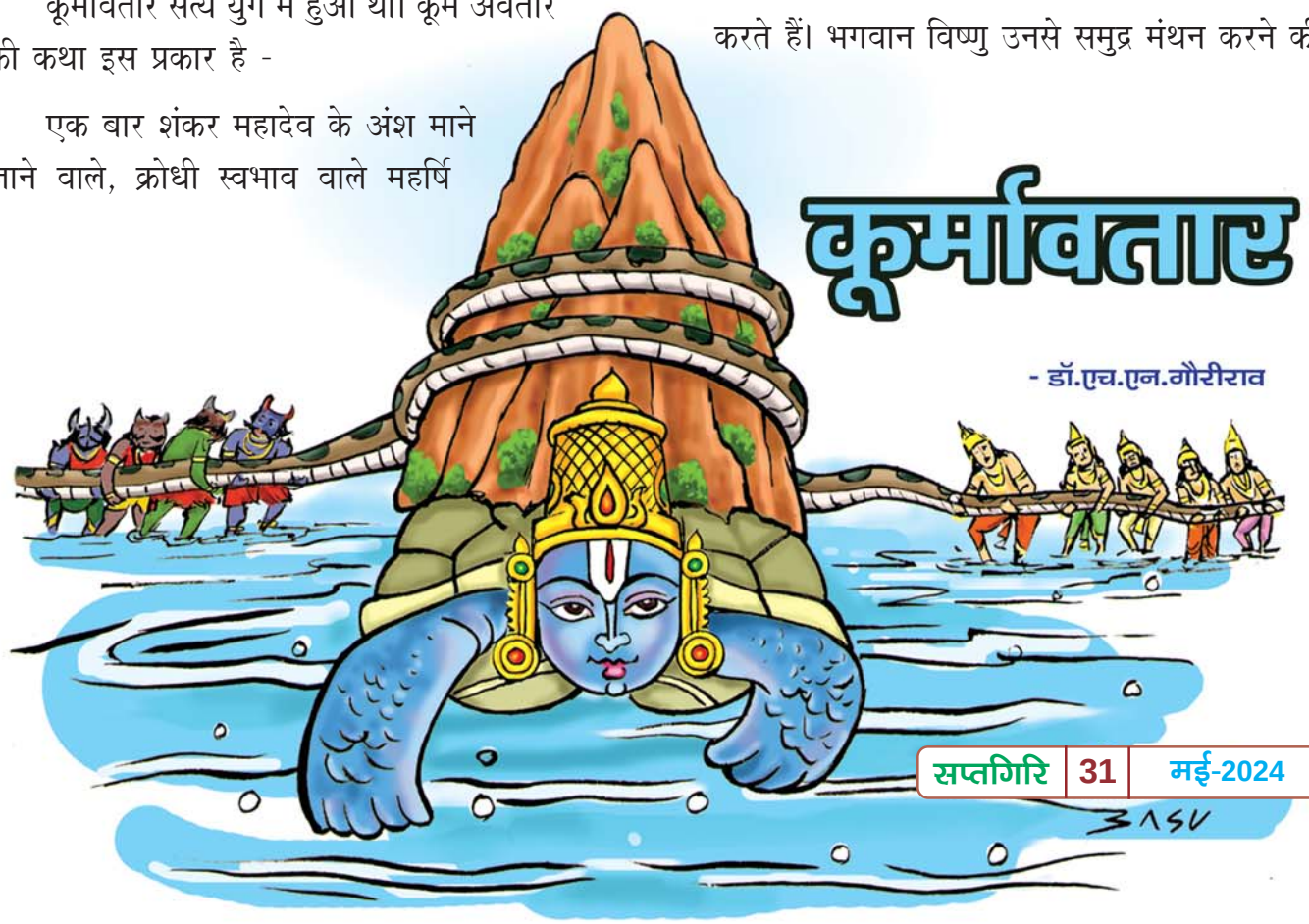

सलाह देते हैं। क्योंकि इस समुद्र मंथन से मिलनेवाले अमृत से वे अजर और अमर बन सकते हैं। परन्तु दुर्वास के शाप से अब देवता शक्तिहीन होने से समुद्र मंथन जैसे दुष्कर कार्य सफल बनाने के लिए शत्रु होने पर भी दानवों से मित्रता करके उनकी सहायता लेने की सलाह देते हैं। विष्णु जी की सलाह के अनुसार सब मिलकर दानवराजा महावीर बलि चक्रवर्ती से मिलते हैं; उनको अमृत देने की लालच दिखाकर सहयोग मांगते हैं। राजा बलि भी दैत्यगुरु शुक्राचार्य से विचार-विमर्श करके इन्द्र से समझौता कर लेते हैं।

क्षीर सागर विशाल तथा अगाध होने से मंथन के लिए मंदार पर्वत को मथनी के रूप में तथा वासुकी नाग को नेती के रूप में बनाते है। देव और दानव अपने शत्रुत्व को भूलकर क्षीर सागर मंथन कार्य आरंभ करते हैं। बृहत् मंदराचल पर्वत को समुद्र तक लाने के लिए भी श्रीमन्नारायण सहायता करते हैं। जब क्षीर सागर मंथन शुरू करते हैं तब मंदराचल पर्वत आधार न होने से समुद्र में नीचे की ओर जाने लगता है। तब भगवान विष्णु देवताओं की रक्षा के लिए एक सुंदर कच्छप (कूर्म) का अवतार लेकर मंदराचल पर्वत के नीचे जाकर पर्वत को अपने ऊपर रखकर उसके आधार के रूप में स्थिर हो जाते हैं। बलिष्ठ कच्छप के विशाल पीठ का व्यास एक लाख योजना थी। विष्णु भगवान के अवतार कूर्म पर मंदराचल मथनी की तरह घूमने लगती है। समुद्र मंथन पूर्ण होने तक शक्तिशाली भगवान कूर्म ऐसे ही सहनता से आधार बनाकर स्थिर रहते है। भगवान की इस लीला को देखकर ब्रह्म, शिव और इन्द्र आदि देवगण उनकी स्तुति करते हुए पुष्प वृष्टि करते हैं। इस मंथन के दौरान सबसे पहले हालाहल निकलता है, जिसे महाशिव पीकर नीलकंठ कहलाते है। इसके अनंतर एक के बाद एक चौदह रत्न निकलते हैं। इनमें से देवी लक्ष्मी को भगवान विष्णु ने अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार करते हैं। अंत में धन्वंतरी अमृत को लेकर क्षीर सागर से निकलते हैं। धन्वंतरी के हाथ से अमृत को दानव तुरंत छीनते है। अमृत के लिये देव और दानव के बीच लड़ाई शुरू होती है। भगवान विष्णु मोहिनी रूप में दानवों को सम्मोहित करके देवताओं को अमृत को सौंपते हैं, जिसको पीकर देवता अमर बन जाते हैं। वे रक्षसों को हराकर स्वर्ग को फिर से प्राप्त करते हैं। इस प्रकार समुद्र मंथन जैसे कठिन पर शुभप्रद कार्य में भगवान विष्णु कूर्म रूप में कदम-कदम पर सहायता करते हैं। कूर्मावतार के कारण ही देवताओं को विजय तथा स्वर्ग फिर से मिलता है, तथा भगवान विष्णु को लक्ष्मी भी मिलती है। इनके अलावा महाप्रलय के बाद समुद्र के गहराइयों में डूबे बहुत से अनमोल रत्न तथा जड़ी बूटियां भी प्राप्त होते हैं।

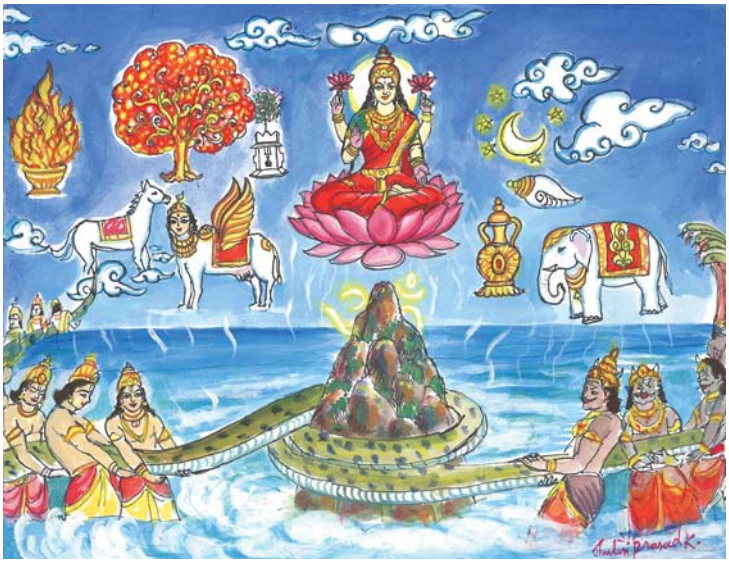

भगवान विष्णु को कूर्म अवतार में मानव-पशु के रूप में दर्शाया जाता है। कूर्म का जो ऊपरी आधा भाग है, वो चार हाथों वाले, शंख, चक्र, गदाधारी विष्णु के स्वरूप का है और नीचे का भाग कछुए के रूप में है। वैशाख मास की पूर्णिमा को भगवान विष्णु ने कूर्म अवतार लिया था। यह दिन कूर्म जयंती के रूप में मनाया जाता है।

कूर्म जयंती का अनुष्ठान :

पूरे देश में कूर्म जयंती का आचरण भक्ति और उल्लास के साथ मनाया जाता है। कूर्म जयंती के अवसर पर विष्णु मंदिरों में विशेष पूजाओं और उत्सवों का आयोजन किया जाता हैं। कूर्म जयंती के पहले दिन से दूसरे दिन तक भक्त उपवास रखता है तथा रात्रि जागरण करता है। जागरण के समय भगवान विष्णु की पूजा की जाती है तथा श्री विष्णु सहस्त्रनाम का पारायण किया जाता हैं। इस दिन, सूर्योदय से पहले स्नान करने के बाद भक्त साफ वस्त्र पहनते हैं और चंदन, तुलसी के पत्ते, कुमकुम, अगरबत्ती, फूल आदि को भगवान विष्णु को समर्पित करके आरती उतारकर प्रार्थना करते हैं। भगवान कूर्म की पूजा करते समय इस मंत्र का जप किया जाता हैं -

ॐ कूर्माय नमः

ॐ हां ग्रीं कूर्मासने बाधाम नाशय नाशय

ॐ आं ह्रीं क्रों कूर्मासनाय नमः

ॐ ह्रीं कूर्माय वास्तु पुरुषाय स्वाहा।

भक्त भगवान से जीवन में दुःखों को दूर करने और समृद्धि के लिए प्रार्थना करते हैं। कूर्म जयंती पर लोग शाम को भगवान विष्णु के मंदिरों में जाते हैं। ब्राह्मणों को दान-दक्षिणा देना भी इस दिन का एक उत्तम कार्य माना जाता है।

श्रीकूर्म क्षेत्र :

श्रीकूर्म, आंध्र प्रदेश में एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है जो वंशधारा नदी के तीर पर स्थित है और दूर-दूर से भक्तों को आकर्षित करता है। इस क्षेत्र की प्रस्तावना कूर्म, ब्रह्मांड और पद्म पुराण में है। कृतयुग में श्वेत चक्रवर्ती और उसकी पत्नी विष्णुप्रिया की तपस्या से प्रसन्न होकर उनकी इच्छा के अनुसार श्रीहरि कूर्म रूप में इस क्षेत्र में प्रकट होते हैं। यहाँ सच्चे मन से प्रार्थना करने पर श्रद्धालु भक्तों की सारी मनोकामनाएँ पूरी होती है। इस क्षेत्र में कूर्म भगवान लक्ष्मी

समेत है और पश्चिम दिशा की ओर विराजमान है। इस मंदिर में अन्य मंदिरों से भिन्न दो ध्वज स्तंभ हैं जिनको शिव-केशव के प्रतीक माने जाते हैं। इस क्षेत्र में पितृ कार्य भी किए जाते हैं।

श्रीकूर्म क्षेत्र में भव्य उत्सवों का आयोजन किया जाता है। हर साल कूर्म जयंती के अवसर पर सैंकड़ों भक्त शाम को मंदिर में भगवान की पूजा करने के लिए आते हैं। वे फूल, फल, नारियल और मिठाई आदि अर्पित करते हैं। ब्राह्मणों और गरीबों को भोजन, वस्त्र और दक्षिणा के रूप में धन को दान करते हैं।

कूर्म जयंती महत्व :

कूर्म जयंती का दिन बहुत ही महत्वपूर्ण है। इस दिन से निर्माण संबंधी कार्य शुरू करना शुभ माना जाता है। कूर्म जयंती के दिन कूर्म की पूजा करने से वास्तु दोष दूर किए जा सकते हैं, तथा नये घर में गृह प्रवेश के लिए यह दिन प्रशस्त माना जाता है। यह विश्वास किया जाता है कि इस दिन कूर्म की पूजा करने से सुख और सौभाग्य की प्राप्ति होती है। कूर्म अवतार से मनुष्य को एक महत्वपूर्ण संदेश मिलता है कि किसी भी कार्य करने का दृढ़ संकल्प, कष्टों को झेलने की सहनता और संयम की शक्ति होने पर कोई भी अपने लक्ष्य तक पहुँच सकता है।

❋❋❋

(युवा)

भगवद्गीता का संदेश

-श्री पी.वी.लक्ष्मीनारायण

भगवद्गीता इस समस्त सृष्टि की स्थिति-गतियों का व्याख्यान है। गीता में चेतना-पुंज मानव को सृष्टि-चक्र में विलीन होकर चलने का दिशा-निर्देश हुआ है। उसे इस भूमंडल पर स्थित स्थावर-जंगम प्रकृति में अपना स्थान दिखाकर, उसके साथ-साथ चलने की शिक्षा प्रदान की गयी है।

गीता का मतलब है - बात या वचन। भगवद्गीता से पता चल जाता है - ''भगवान का वचन!'' यानी आपातकालीन मानव को भगवान का प्रदत्त वचन व सलाह।

घोर भीकर संग्राम के आयत्त कुंती-सुत महावीर अर्जुन, अपने इर्द-गिर्द जमे हुए अपने भाई, साले, दामाद, मामा, बहनोई आदि सग-संबंधियों से युद्ध करने पर विमुक्त होकर, विमूढ़ बन कर स्थद्ध होकर खड़ा रह जाता है। उस समय युद्ध एक अनिवार्य प्रक्रिया थी।

युद्ध को होकर ही रहना था, जिस में पाण्डवों को जीव के ही रहना था और अपने शत्रुओं को मारके ही विशेष प्रयोजन की सिद्धि पानी थी। और, युद्ध-संचालक (War-driver) श्रीकृष्ण भगवान के युग-संबन्धित अनेकानेक प्रयोजन थे।

कुरुक्षेत्र-युद्ध एक युग-प्रामाणिक प्रमुख युद्ध था, जो केवल अठारह दिन चला था, जिसमें 77 करोड़ वीर योद्धाओं की मृत्यु हो गयी थी। अब तक विश्वभर के किसी भी संग्राम इतनी तादाद में वीरों की मृत्यु न हो सकी। यह एक प्रमाण है।

ऐसे किये जा सकने वाले घोर संग्राम में विरक्त अर्जुन में ''जीवन के प्रयोजन के दृश्यमान विषय-पुंज का आरोप'' कर, श्रीकृष्णपरंधाम ने युद्ध-विमुख अर्जुन को युद्ध-सुमुर बना कर, जीवन की सफलता का चमत्कार हासिल किया।

भगवद्गीता में आदेश है भगवान का, निर्देश है सफलता का और है विजयी मानव का हुंकार।

सात्विक कर्ता

मुक्तसंगोऽनहंवादी धृत्युत्साह समन्वितः।

सिध्यसिद्धो र्निर्विकारः कर्ता सात्विक उच्यते।।

(गीताशास्त्र 8-26)

भावार्थ

फल की अपेक्षा व आकांक्ष छोड़ कर, निरहंकारी बन कर, फलाफल में से भले-बुरे विकारों से उत्तेजित न बनकर, धृत उत्साह और विश्वासों के साथ जो मनुष्य कर्म करता है, वह ''सात्विक कर्ता'' कहलाता है।

विवरण

भगवान कृष्ण ने इससे पहले-ज्ञान, कर्म और कर्ता के तीन रूपों में उपस्थित होने का विवरण दिया हुआ है। ज्ञान और कर्म - इन दोनों का विवरण देने के पश्चात्, अब तीन किस्मों के कर्त्ताओं के संबंन्ध में कह रहा है।

स्वामी कहते हैं कि ''सत्वगुण-संपन्न लोग'' आलसीपन के साथ नहीं होते। ऊपर से वे लोग-उत्साह एवं दृढ़-चित्त के साथ काम करते हैं। भेद यह है कि उनके काम करने का दृक्पथ ही कुछ अलग होता है।

सात्विककर्त्ता 'मुक्तसंग' हैं। यानी, मुक्तसंगी लोग इस सांसारिक ममकारों पर, वस्तुओं पर आसक्त या अनुरागी नहीं होते। वे विश्वास नहीं करते कि सांसारिक वस्तुएँ आत्मा को तृप्त करती हैं। इसी कारणवश मुक्तसंग सात्विक कर्ता उत्तम आशयों तथा लक्ष्यों के साथ कर्म करते हैं। और भी, सात्विककर्ताओं के उद्देश्य पवित्र होने पर, वे उत्साह एवं दृढ़ चित्त के साथ परिश्रम करते हैं। कार्य करने के निरंतर समय तक सात्विककर्ताओं के मानसिक दृक्पथ के कारण उनकी कम-से-कम शक्ति व परिश्रम का विनियोग होता है। तभी तो वे लोग थकावट के बिना निरंतर कार्यरत हो सकते हैं।

वे लोग महत्तर तथा बड़े-बड़े कार्यों का साधन करने पर भी, 'अनहंवादी यानी अहंकार-रहित होंगे। अतएव, सात्विकवादी लोग अपनी कार्य-साधना का श्रेय वे भगवान को ही समर्पित कर, नमस्कृत होते हैं। अतः मानव को सर्वत्र, सर्व कार्येषु अहंकार-रहित हो कार्यरत होना चाहिए।

परमात्मा का विश्वरूप - संदर्शन

अनादि मध्यांत मनंतवीर्य मनंत बाहुं शशिसूर्य नेत्रम्।
पश्यामि त्वां दीप्तहुताशवक्त्रं स्वतेजसा विश्वमिदं तपंतम्।।

(गीता 11-19)

भावार्थ

''आदि, मध्य और अंत रहित, अपरिमित शक्ति-युत, अनंत बाहुओं से होकर, सूर्य और चन्द्र के नेत्रों से होकर, प्रज्वलित अग्नि की भाँति मुख-कांति पाकर-अपने तेजस के साथ समस्त विश्व को तपित करने वाले तुम्हारे अखण्ड रूप को मैं समझने का प्रयत्न कर रहा हूँ।''

पूर्व रंग

कुरुक्षेत्र संग्राम भूमि। कृष्णपरमात्मा विरागी अर्जुन को मानव-जीवन का परमार्थ-बोध देकर, उसे युद्ध-सुमुख (कर्तव्य पालित) व्यक्ति बनाने के सिलसिले में, अर्जुन में विश्वास जगाने-हेतु, उसे अपने स्वस्वरूप का संदर्शन करवाया। अर्जुन को परमात्मा के अनंत ब्रह्मांड विराट्रूप का दर्शन मिल गया। असीम विभ्रम में अर्जुन भगवान को संबोधित कर कह रहा है...

विवरण

बन्धु-प्रीति के कारण अर्जुन विवश होकर युद्ध करने से विमुख बन गया। श्रीकृष्ण परमात्मा ने अर्जुन में ढ़ेर-सारा जीवन-ज्ञान भर दिया। इतना ही नहीं अपने विराट्रूप का दर्शन भी दिया।

परमात्मा के विराट्रूप के संदर्शन से मानव अर्जुन में असीम संभ्रम व्याप्त हो गया। ऐसे संभ्रमी अर्जुन श्रीस्वामी से विवशता में ऐसा बोल रहा है...

16वें श्लोक, 'अनेक बाहूदरबक्त्र नेत्रं' वाले में भी अर्जुन ने परमात्मा के विराट्रूप का विभ्रांतमान मन से बरन किया था।

वास्तव में अर्जुन अपनी सुध-बुध खो बैठा था। क्योंकि उसे परंधाम का अनन्य स्वरूप का दर्शन हठात् हो गया था। अनंत विश्व में अन्य देशों के अनगिनत

धर्म व्याप्त हैं, जिन्हें आज तक अनंत के स्वस्वरूप का दर्शन प्राप्त न हो पाया है। एक हिन्दू-धर्म में ही अर्जुन, धृतराष्ट्र आदियों को ही भगवान के विश्व-विराट्रूप का दर्शन हो पाया है।

भगवान का वास्तव में आदि और अंत नहीं होता। वह तो विश्वव्यापी है, क्योंकि, आकाश, काल और कारणबल (कार्य-कारण) सब उसी में मिश्रित हैं। इसलिए परमात्मा इन सबके अतीत है। हम उसे परिमाण में, काल में अथवा कारणत्व में बन्धित नहीं कर सकेंगे। उसे हम इतनी परिमात्रा में माप नहीं सकेंगे। इतना ही नहीं सूर्य, चन्द्र और नक्षत्रगण अपनी-अपनी कांति और शक्ति उसी परमात्मा से ही पा सकते हैं। इस प्रकार इस विश्व को गर्मी इन घटकों के द्वारा वही दे सकता है। तद्वारा इस समूचे ब्रह्माण्ड-भाण्ड की रक्षा वह करता है।

गीताकार परमात्मा श्रीकृष्ण ने इस ब्रह्माण्ड का मूलश्रोत अपने को बताया है।

भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेवच
अहंकार इतीयं में भिन्ना प्रकृतिरष्टदा।

(गीता 7-4)

भावार्थ

भगवान कहते हैं - ''मेरी भिन्न प्रकृति (स्वाभाव) है''।

भूमि, जल, अग्नि, वायु, आकाश, मन, बुद्धि, अहंकार - नामक इन आठ घटकों में मेरी प्रकृति (स्वभाव व रूप) विभाजित हो उपस्थित है। ये आठों घटक मेरे ही प्रतिरूप हैं।

विवरण

इस श्लोकराज के द्वारा भगवान अपने स्वरूप निरूपण का प्रयत्न करते हैं। उनका कहना है कि इस भौतिक संसार को संकलन करने की शक्ति बहुत ही संक्लिष्ट एवं अर्थहीन भी है। मनुष्य की परिमित मेधा के लिए समझ में आने के लिए मैं ने विविध वर्ग तथा उपवर्ग बनाये हैं। आधुनिक शास्त्र पदार्थ को मूलकों के मिश्रण के रूप में प्रचार करता है।

कुछ भी हो, वेद, तत्वशास्त्र और भगवद्गीता इस भौतिक संसार का तीव्र और भिन्न वर्गीकरण का प्रदर्शन करते हैं। यहाँ पदार्थ परमात्मा की शक्ति में एक विभाग परिगणित किया जाता है। और, पदार्थ को ही ''प्रकृति'' कहा जाता है।

इस श्लोक में पदार्थ जो भगवान का स्वरूप है, आठ रूपों में विभाजित किया है, मानो एक तालिका तैयार की गयी हो। यह आश्चर्य की बात है कि आधुनिक विज्ञानशास्त्र में वृद्धि पाती हुई विधाओं से मापने पर, यह प्राचीन ग्रन्थों का ज्ञान कितना ज्ञानयुक्त है।

विख्यात विश्वशास्त्रवेत्ता आल्बर्ट ऐनस्टीन का "MASS ENERGY EQUIVA LENSE" और उसका समीकरण $E=MC^2$ तथा नील्सबोर और अन्य शास्त्रज्ञों का QUANTUM THEORY के संबन्ध में - आज से 5,000 साल पहले श्रीकृष्ण परमात्मा ने परिपूर्ण एकीकृत सिद्धान्त को बहिर्गत किया है।

समापन

भगवद्गीता सर्वकालीन समग्र मानव जीवन के स्वस्वरूप का विशद व्याख्या रहा है। गीता में मनुष्य के लिए आचरण शील मनोविज्ञान की स्पष्ट रूप-रेखा का चित्त मिलता है। गीताशास्त्र सर्वकालीन आचरण-सूत्रों का गुँथन है और मनोवैज्ञानिक मंथन है।

भगवद्गीता पढिये! जीवन-ज्ञान पाईये!!

❋❋❋

माद्री मद्र देश की राजकुमारी है। हस्तिनापुर के महाराज पांडु की दूसरी पत्नी है। पाँच पांडवों में नकुल और सहदेव की माता है। कुंती से विवाह होने के बाद पांडु राज पितामह भीष्म की अनुमति पाकर माद्री से भी शादी कर लेता है। माद्री हमेशा पटरानी कुंती को बड़ी बहन समझती है। दोनों रानियाँ सदा मिलजुलकर रहती हैं। जब पांडु राज वन विहार के लिए दोनों पत्नियों के साथ वन में पहुँचता है, तब दुर्भाग्यवश वह किंदम मुनि के शाप ग्रस्त हो जाता है और तब से राजभोग छोड़ कर संन्यासी की जिंदगी बिताते हुए वन में ही रह जाता है तो कुंती और माद्री भी उसके साथ पति की सेवा करती हुई वन में ही रह जाती है। वे भी पति की अनुगामिनी बनकर संन्यासिनी की तरह जिंदगी बिताती रहती हैं।

पांडु राज शिकार खेलते समय संभोग करते हुए हिरण और हिरणी को बाणों से मार देता है। सच में वे मृग नहीं, मृगवेशधारी मुनि दंपति थे। अंतिम साँस लेते हुए हिरण वेशधारी किंदम मुनि पांडु राज से पूछता है कि - ''राजा को शिकार करने का अधिकार है, लेकिन संभोग करने वाले जानवर को मारना धर्म विरुद्ध है। यह जानकर भी तुमने ऐसा क्यों किया?'' विधि से प्रेरित पांडु राज गुस्से से कहता है कि जानवरों को मारना धर्म विरुद्ध नहीं है। तब मुनि किंदम पांडु राज को शाप देता है कि ''सृष्टि में सर्व प्राणियों को सहज और पसंद संभोग सुख अनुभव करते समय तुमने हत्या किया इसलिए अगर तुम अपनी पत्नी से संभोग करोगे, तो तुरंत ही तुम मर जाओगे और जिस पत्नी से तुम यह काम करोगे, वह भी मर जाएगी।'' तब से पांडु राज संन्यासी बनकर रहने लगता है।

शाप ग्रस्त पति पांडु राज के पिता बनने की चाह को पूरा करने के लिए कुंती उसे बचपन में दुर्वास ऋषि से प्राप्त वर को स्मरण कर, उस वर प्रभाव से माता बनती है। युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन को जन्म देती है। वन में सौत कुंती और हस्तिनापुर में धृतराष्ट्र की पत्नी गांधारी जब माँ बनती हैं, तब से माद्री उदास हो जाती है। स्त्री सहज मातृत्व पाने के लिए उसका दिल तड़पने लगता है। पत्नी की उदासीनता को पहचानकर पति पांडु राज के पूछने पर वह माद्री माँ बनने की इच्छा को प्रकट करती है। पांडु राज उसकी वेदना को समझ लेता है और कुंती से अनुरोध करता है कि वह माद्री को भी माता बनने का सौभाग्य प्रदान करें तो कुंती मान लेती है। तथा कुंती की मदद से माद्री माँ बनती है। अश्विनी देवताओं की कृपा से माद्री जुडवे भाइयों को जन्म देती है। वे ही नकुल और सहदेव हैं।

वसंत ऋतु की प्राकृतिक शोभा एवं माद्री की सुंदरता से मुग्ध होकर राजा पांडु उसके प्रति मोह को रोक नहीं पाता। शाप को याद करके माद्री उसे रोकने की बहुत कोशिश करती है लेकिन वह मोहातुर पति को रोकने में विफल हो जाती है। फलतः शाप के प्रभाव के कारण राजा पांडु मर जाता है। माद्री बहुत व्यथित हो जाती है, वह इस विषय में खुद को माफ नहीं कर पाती है। पति के साथ सहगमन करना चाहती है। कुंती के समझाने पर भी वह नहीं मानती और कहती है कि - कुंती! तुमने अपनी मंत्र शक्ति से कुरु वंश को नाश होने से बचाया। पति पांडु राज को बहुत प्रसन्न करके उन्हें पुण्य लोक प्राप्ति के लायक बना दिया। लेकिन मैं पति के एक भी चाह को पूरा नहीं कर पाई हूँ इसलिए ऊर्ध्व लोकों में उनके साथ ही रहकर उस कमी को पूरा करूँगी। मैं मुनि के शाप को जानती हूँ लेकिन मैं सावधानी और सतर्कता से नहीं रह सकी। इस प्रकार मैं दैवांश संजात इन पाँच पुत्रों का ठीक से देखभाल नहीं कर सकती हूँ, इसलिए मुझे मत रोको। मुझे पूरी तरह विश्वास है कि तुम बिना किसी पक्षपात के इन पाँचों पुत्रों का ठीक से देखभाल कर सकती हो। ऐसा कहने के बाद अपने दोनों बेटों को कुंती के हाथों में सौंपकर माद्री सतीसहगमन हो जाती है।

इस तरह खुद की गलती के लिए जान दी माद्री महाभारत में सबकी सहानुभूति पाती है।

❋❋❋

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

ओंटिमिट्टा, श्री कोदंडरामस्वामी मंदिर

आंध्रप्रदेश, कडपा जिला, ओंटिमिट्टा प्रांत में विराजित श्री कोदंडरामस्वामी मंदिर बहुत प्राचीन श्रीराम मंदिर है। इस प्रांत को 'एकशिलानगर' भी कहते हैं। इस मंदिर का निर्माण जांबवंत ने किया। इस आलय से संबंधित दर्शन एवं सेवा का विवरण निम्नांकित हैं।

मंदिर का दर्शन समय

प्रातः 5.00 बजे से रात 9.00 बजे तक भगवान जी को दर्शन कर सकते है।

प्रातः 5.00 बजे से सुबह 7.30 बजे तक दर्शन

सुबह 7.30 बजे से सुबह 8.15 बजे तक प्रथम घण्टानाद

सुबह 8.15 बजे से सुबह 10.30 बजे तक दर्शन

सुबह 10.30 बजे से सुबह 11.15 बजे तक द्वितीय घण्टानाद

सुबह 11.15 बजे से सायं 5.30 बजे तक दर्शन

सायं 5.30 बजे से सायं 6.15 बजे तक तृतीय घण्टानाद

सायं 6.15 बजे से रात 8.45 बजे तक दर्शन

रात 8.45 बजे से रात 9.00 बजे तक एकांतसेवा

भगवान जी का सेवा टिकट विवरण

1) कल्याणोत्सव - रु.1,000/- दो व्यक्ति के लिए, समय सुबह-9.00 बजे को

2) अभिषेक - रु.150/- दो व्यक्ति के लिए, हर शनिवार, समय सुबह-6.00 बजे को

3) स्वर्ण पुष्पार्चन - रु.250/- एक व्यक्ति के लिए, हर रविवार, समय सुबह-8.30 बजे को

सूचना

मंदिर के प्रांगण में स्थित काउण्टरों में (या) ऑनलाइन के माध्यम से भी टिकट प्राप्त कर सकते है। कृपया भेंट हुण्डी में ही डालें।

मैं प्रथम राम! भार्गव परशुराम!!

डॉ.विजयप्रकाश त्रिपाठी

वांगमय वर्णित मैं प्रथम राम।
मैं सारंगधर, भार्गव परशुराम।।

मृत्युमुक्त, षष्टम दशावतार मैं
श्रीहरि विष्णु का आवेशावतार मैं।
मैंने की शम्भु साधना आत्मभाव से,
शिव जी से मिला कुठार भव्य भाव से,
ऋषि ऋचीक से मिला धनुष सारंग,
जिसकी टंकार में घन गर्जन सी उमंग।
अनय विरुद्ध है, मेरा यह वीर वेश,
मेरा सिद्धांत सत्ताओं में हो नय निवेश।
मैंने की है कौशिक कश्यप शिष्यता,
शम्भुभक्ति से मुझको सुलभ अजेयता।
देव गजानन को, मैंने एकदंत किया,
अनभिज्ञता प्रकट करके अभय लिया।
मेरा स्वरघोष, बम विश्वनाथ,
जय प्रलयंकर जय शिव शिवानाथ।

मैंने शिव से सदा यही मांगा,
आत्म निर्भर जन का न झुके माथ।।
वांगमय वर्णित मैं प्रथम राम।
मैं सारंगधर भार्गव परशुराम।।

क्षत्रिय दुहिता मातु रेणुका का सुत हूँ,
ऋषिकुल में आयुधमय होकर अद्भुत हूँ।

स्वप्रेरित धारक वैदिक धर्मध्वजा का,
न्यायी क्षत्रियजन से, अभाव शत्रुता का।
निरंकुश लोभी हैहय वंशज अर्जुन ने,
गौप्राप्ति लोभ में, वध किया पिता का।
मैंने समरभूमि को शोणित कुंड बना,

शत्रु रक्त से अभूतपूर्व तर्पण किया था।
मैंने लेकर संकल्प हता दुष्ट पितृहंता,
मेरे अमरत्व में ही व्याप्त विष्णु अंशता।
माता, पिता, गुरु जीवित श्रेष्ठ देवता,
मुझसे भयभीत, हर अन्यायी की सत्ता।
मैं करता सतत अधर्म का क्षय,
यत्र तत्र सर्वत्र हो धर्म की जय जय।
मेरा प्रयास जग से मिटे अनय,
सार्थक सृजन कर्मठता रहे अभय।।

वांगमय वर्णित मैं प्रथम राम,
मैं सारंगधर भार्गव परशुराम,

दुष्ट दमन ही आजीवन लक्ष्य रहा,
नश्वर सम्पदा संग्रह से मैं निरपेक्ष रहा।
छाया था आर्यावर्त में आतंकतंत्र,
सहस्त्रार्जुन हैहय था निरंकुश स्वतंत्र।
ज्ञान केन्द्र गुरुकुल थे आपदाग्रस्त,
नारी असुरक्षित, कृषिक्षेत्र अस्त व्यस्त।
माता का अकाल वैधव्य था असह्य,
तब मैंने सारंग परशु का सन्धान किया।
पीड़ित लोगों में शौर्य ओज भरकर,
हैहय वंशी क्षत्रियों का अवसान किया।
अब तक समर्पित अनय से रण में,
गुरुपद धारूंगा श्री कल्कि अवतरण में।

जनमन में राष्ट्र भक्ति भरता मैं,
सज्ञन हों अभय सुयत्न करता मैं।
मेरा अदृश्यवास महेंद्र गिरि पर,
अदृश्य रुप में, निर्बल संग रहता मैं।।

वांगमय वर्णित मैं प्रथम राम।
मैं सारंगधर भार्गव परशुराम।।

❋❋❋

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

लेखक-लेखिकाओं से निवेदन

सप्तगिरि पत्रिका में प्रकाशन के लिए लेख, कविता, रचनाओं को भेजनेवाले कृपया लेखक-लेखिकाओं निम्नलिखित विषयों पर ध्यान दें।

1. लेख, कविता, रचना, अध्यात्म, दैव मंदिर, भक्ति साहित्य विषयों से संबंधित हों।
2. कागज के एक ही ओर लिखना होगा। अक्षरों को स्पष्ट व साफ लिखिए या टैप करके मूलप्रति डाक या ई-मेइल (hindisubeditor@gmail.com) से भेजें।
3. किसी विशिष्ट त्यौहार से संबंधित रचनायें प्रकाशन के लिए ३ महीने के पहले ही हमारे कार्यालय में पहुँचा दें।
4. रचना के साथ लेखक धृवीकरण पत्र भी भेजना जरूरी है। 'यह रचना मौलिक है तथा किसी अन्य पत्रिका में प्रकाशित नहीं है।'
5. रचनाओं को प्रकाशन करने का अंतिम निर्णय प्रधान संपादक का कार्य होगा। इसके बारे में कोई उत्तर प्रत्युत्तर नहीं किया जा सकता है।
6. मुद्रित रचना के लिए परिश्रमिक (Remuneration) भेजा जाता है। इसके लिए लेखक-लेखिकाएँ अपना बैंक पास बुक का प्रथम पृष्ठ जिराक्स (Bank name, Account number, IFSC Code) रचना के साथ संलग्न करके भेजना अनिवार्य है।
7. धारावाहिक लेखों (Serial article) का भी प्रकाशन किया जाता है। अपनी रचनाओं को निम्न पते पर भेज दें। पता-

प्रधान संपादक,
सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे.प्रेस परिसर, के.टी.रोड,
तिरुपति – 517 507. चित्तूर जिला।

अध्याय - 13

आनंदनिलय के महोज्ज्वल विमान में श्री वेंकटेश्वर स्वामी

भगवान श्री वेंकटेश्वर अपने आनंदनिलय-दिव्य-विमान में गर्भालय के बीच विराजमान हैं। उनकी मूलविराट मूर्ति आठ फुट ऊँची है। सुवर्ण मणिमय किरीट मुकुट धारण किये हुए हैं। मरकत मणि वक्षःस्थल पर शोभित है। तेलुगु नव वर्ष 'उगादि' के अवसर पर, आणिवर आस्थानम्, ब्रह्मोत्सवम् आदि विशेष अवसरों पर वे नवीन वज्र किरीट से शोभित होते हैं। कर्पूर 'नामम्' (ऊर्ध्वपुण्ड्र) से अधिक आकर्षक दिखाई देते हैं। कर्पूर तिलक (कर्पूर नामम्) उनकी आखों को कुछ ढाँकता है। शुभ्र धवल कांतियों से भासित कर्पूर तिलक के बीच कस्तूरि तिलक उनके माथे पर अत्यंत शोभायमान होकर भक्तों को तन्मयता प्रदान करता है। त्रिपुड्रांकित पद्मनयन का दर्शन भक्तों के लिए मन मोहक ही है। प्रकाशमान मकर कुण्डलों की शोभा वर्णनातीत है। चिबुक (ठोडी) पर अंकित कर्पूर चूर्ण मुख की शोभा को दुगुना करता है। ऊँचे उठे दक्षिण हस्त में मणि जडित चक्र और उसके समानांतर में विलसित वाम हस्त में शंख विराजित हैं। उसी प्रकार पदकमलों की ओर संकेत करता एक और दक्षिण हस्त, ऐसा सूचित करता है कि मुक्ति पाने का एक मात्र सरल स्थान उनका पदयुगल ही है। भगवान का एक वाम हस्त कटि प्रान्त में विलसित होकर भक्त को यह संकेत देता है कि उनके चरणारविन्दों में पहुँचनेवाले भक्त को संसार-सागर कटि तक की गहराई का ही लगेगा। अर्थात् संसार रूपी सागर में प्रवेश करने पर सागर का जल (कष्टों का घेराव) मात्र उसकी कटि (कमर) तक ही (पार करने योग्य) होगा। चतुर्भुजी भगवान का सुंदर रूप भक्तजन रक्षक मुद्रा में आकर्षक और आनंददायक प्रतीत होता है। भगवान की मूर्ति के हाथ मणि खचित आभूषणों (अभि-भूषण) से जडित हैं। कंठ के अनेक कंठहार वज्र-मणि विराजित हैं। कंकण भी उतने ही अमूल्य रत्नों से लसित हैं। 108 लक्ष्मी मुद्राओं से युक्त लक्ष्मीहार अत्यंत पवित्र है। 'मकरकंठि' नामक वज्राभरण घुटनों तक विराजमान है। मोतियों की लडियों से युक्त मोतीहार अपनी उज्वल कांतियों से भक्तों के हृदय को प्रसन्न करता है। उर पर वैजयंति माला (पुष्पों की माला) और (तुलसी माला) वनमाला दोनों

भगवान की शोभा को द्विगुणीकृत करती हैं। उनका वक्षःस्थल कौस्तुभ मणि श्रीवत्सांकित होकर प्रकाशित रहती है। सुवर्ण यज्ञोपवीत (ब्रह्मसूत्र) कंधे पर विराजमान है। वक्षःस्थल पर दाहिनी ओर श्री लक्ष्मी देवी और बाई ओर भूदेवी (श्री पद्मावती देवी) विलसित हैं। भगवान पीतांबरधारी हैं। छोटी-छोटी घंटिकाओं से लसित कटि में विराजमान सुवर्ण करधनी से शोभित मूर्ति हैं जिनके पास नंदक नामक कठारी (तलवार) लटकती है। भगवान के पदकमल सोने से मंडित हैं। चरणों में नूपुर शोभित हैं। दिव्य सुंदर मूर्ति अगणित शोभा से युक्त हैं।

भगवान की घुंघुराली जटाएँ लटकती रहती हैं। ये पीछे पीठ पर शोभायमान रहती हैं। सामने दिखाई नहीं देती हैं।

[अंगांग सौंदर्य का वर्णन भगवान के अवतरण के समय वहाँ उपस्थित ऋषि, मुनि और देवता समूह से किया गया था। उन सबको भगवान के दिव्य दर्शन का लाभ प्राप्त हुआ था। यह दर्शन उन्हें पहले स्वामिपुष्करिणी तट पर आविर्भूत होने के समय पर हुआ था। - पद्मपुराण, अ. 4, श्लोक 38-61; अ. 1, श्लो. 38-61; (अ.80), भविष्योत्तर पुराण; आदित्य पुराण, अ.1, श्लो. 12, 13, 14, 26, 27 और 29]

[[आदित्य पुराण; अ. 1, श्लोक 42 में स्पष्ट किया गया है- ''आनंद ज्ञानदं विष्णुं आनंदमय नामकं, आनन्देन ददर्शायं आनन्दनिलयालये।'' यहाँ भगवान वेंकटेश्वर को 'आनन्दमय' और उनके मंदिर को 'आनन्दनिलय - आलय' कहा गया है। 'आनन्द जनकत्वात्तं', 'आनन्दनिलयं विदुः' - आनन्द का जनक आनन्दलियम है। - भविष्योत्तर पुराण, अ. 13, श्लो. 81]]

[[श्री वेंकटेश्वर भगवान के मंदिर के पारुपत्यदार श्री यस.वी.लक्ष्मीनरसिंह राव ने अपनी पुस्तक 'श्री तिरुमल तिरुपति यात्रा' में पृ. 85 पर कहा है कि विमान के पूर्व भाग में मार्कण्डेय मुनि द्वारा आलिंगित शिवलिंग है तो उत्तरी भाग में ''विमान-श्रीनिवास'' की मूर्ति है। इन दोनों को अच्छी तरह देखा एवं पहचाना जा सकता है।]]

[[श्री वेंकटेश्वर ने आरंभ में ही कहा था कि वे शंख और चक्र के बिना रहेंगे। कुछ काल बाद एक राजा होगा और वह उनके हाथों में शंख और चक्र धारण करवायेगा। आकाशराजा के बाद उनके छोटे भाई तोंडमान राजा हुए। आकाशराजा की मृत्यु के बाद जब उनके पुत्र वसुदास और छोटे भाई तोंडमान के बीच युद्ध चिढ़ा तब भगवान ने वसुदास के पक्ष में जाकर सहायता की थी। लेकिन तोंडमान के पक्ष से लडने के लिए हरि ने शंख और चक्र उनको दिये। इन आयुधों से उनको लाभ हुआ। (भविष्योत्तर पुराण, अ. 12, श्लो. 67)। बाद में जो समझौता हुआ उससे तोंडमान को भी राज्य मिला। परिणामस्वरूप तोंडमान ने भगवान के लिए मंदिर और विमान के निर्माण की प्रतिज्ञा की। ब्रह्म और अन्य देवता समूह के समक्ष भगवान ने मंदिर प्रवेश किया। पद्मावती को वक्षःस्थल पर स्थान देकर भगवान मंदिर में गये। परन्तु हाथों में शंख और चक्र नहीं थे। (भविष्योत्तर पुराण, अ. 13, श्लो. 82)। कुर्वा गाँव के कुम्हार भीम को भगवान का सारूप्य मिला था। उस समय तोंडमान भी वहाँ थे। भीम के वैकुण्ठ में दिव्य विमान द्वारा पहुँचने के बाद ही तोंडमान ने शंख, चक्र आदि को वापस किया। तब तक श्री वेंकटेश्वर शंख, चक्र रहित ही रहे। तोंडमान राजा ने उनके हाथों में शंख-चक्र धारण कराये थे। एक और बात भी प्रचार में है कि भगवान ने कुम्हार भीम को विमान में शंख, चक्र, कौस्तुभ तथा पीतांबर से अलंकृत कर वैकुण्ठ भेजा था। रिक्त हाथों के भगवान को मूल शंख और चक्र के स्थान पर बनाये गये शंख-चक्र आदि से तोंडमान ने अलंकृत किया।]]

शरीर प्रकृति और आभूषणों को परखने से स्पष्ट होता कि श्री वेंकटेश्वर की मूलविराट मूर्ति विष्णु और शिव की समन्वित संश्लिष्ट मूर्ति है। पुराणों के कथनों से भी यह विदित होता है। अहिभूषणम् या नागाभरणम् तथा जटाएँ शिव के संकेत हैं तो श्रीवत्सम्, कौस्तुभमणि और वैजयंतिमाला विष्णु के सूचक हैं। वेंकटेश्वर इस प्रकार हरि-हर की युगल मूर्ति लगते हैं। स्मार्तो-शैव के आराध्य हैं तो विष्णु वैष्णवों के। श्री वेंकटेश्वर के इस युगल स्वरूप को पहचाना गया है। पुराणों एवं वैष्णव आल्वारों से भी सूचित हैं। (पोय्गै आल्वार, पद-5 तथा 74)। (डॉ.यस.के. अय्यंगार का 'ए हिस्टरी ऑफ तिरुपति' - खंड 1, पृ. 59-60)। पेयाल्वार, पद संख्या 63) (डॉ. अय्यंगार, पृ. 79-80)। मार्कण्डेय के आलिंगन में बद्ध शिव लिंग का विमान पर होना, कुमारधारा तीर्थ तथा स्वामिपुष्करिणी नाम (कुमार स्वामी का स्मरण करना) इसके सूचक हैं। कुमार स्वामी तो शिव के पुत्र हैं। इनको षण्मुख, सुब्रह्मण्य स्वामी भी कहते हैं। अन्य बाह्य संकेत भी शैव प्रकृति के मिलते हैं जो श्री वेंकटेश्वर के साथ सम रूप में जुडते हैं। वैष्णव संकेतों से वे विष्णु से भी जुडते हैं।

श्री वेंकटेश्वर प्रकृतितः या मूलरूप से शैव मूर्ति हैं या वैष्णव मूर्ति - इस संबन्ध में वाद-विवाद शताब्दियों से प्रचलित रहे हैं। लेकिन 12वीं शताब्दी में रामानुजाचार्य जी ने इस विवाद को पूर्णतः निर्विवाद के रूप में परिवर्तित किया है। इस दिशा में वे अवश्य विजयी हुए हैं। इस संदर्भ में स्थानीय यादवराजा का सहयोग उन्हें अवश्य मिला ही होगा। शायद इसी समय श्री वेंकटेश्वर के हाथों में शंख और चक्र भी लगे होंगे। वैखानस आगमानुसार पूजाविधान का निरूपण भी इसी समय हुआ होगा। इसी प्रकार सीता, राम और लक्ष्मण की भी पूजा आदि का आरंभ माना जा सकता है। ये 'तमिल-प्रबन्धम्' की परंपरा के अनुसार नियोजित हुए होंगे। इस पर लंबी चर्चा डॉ.यस.कृष्णस्वामी अय्यंगार द्वारा लिखी गई पुस्तक ''ए हिस्टरी आफ् तिरुपति'' में हुई है (पृ. 265, 266, 279, 280, 288-290)। उन्होंने भगवान श्री वेंकटेश्वर के विष्णु स्वरूप पर अधिक जोर देकर समर्थन किया है। भगवान को उन्होंने श्रीनिवास ही कहा है (पृ. 279-280)। इस संदर्भ में उनकी कट्टरवादिता भी कुछ हद तक मिलती है। यहाँ इतना ही

कहा जा सकता है कि नवीं शती की मूलविराट मूर्ति शंख-चक्र विलसित नहीं थी। ये विष्णु के संकेत हैं।

वैष्णव संकेत त्रिपुण्ड्र (तिरुनामम्), शंख-चक्र आदि के बावजूद भी कुछ लोग वेंकटेश्वर को शिव ही मानते हैं। वे मानते है कि जिन हाथों में आज शंख और चक्र है, वे कुछ समय पहले रिक्त थे और उनमें पहले त्रिशूल और डमरुक (डमरू) रहें होंगे। शंख और चक्र श्री रामानुजाचार्य के द्वारा रखवाये गये हैं। फर्गुसन ''इंडियन एण्ड ईस्ट्रन आर्किटेक्चर'' (खंड 1, पृ. 404, नोट-2) में जे.डी.बी. ग्रिबल की टिप्पणी का उल्लेख है। ग्रिबल का कथन या दृष्टिकोण 'कलकत्ता रिव्यू' (खंड LXI पृ. 142-156) में ''द टेंपुल आफ् विष्णु आन द हिल आफ तिरुपति'' शीर्षक लेख में मिलता है। यह 1875 में प्रकाशित है। उनके अनुसार - ''यह मंदिर द्राविड मंदिर निर्माण का अच्छा नमूना है। द्वितीय श्रेणी में यह नमूना आता है। खेद की बात है कि यह जीर्ण शीर्ण तथा जीर्णोद्धार की स्थिति से परे है। यह मूलतः शैव मंदिर है, लेकिन श्री रामानुजाचार्य ने इसे वैष्णव मंदिर में परिवर्तित किया है। यह 12वीं शती में हुआ है।''

क्रमशः

(आयुर्वेद)

सुपारी का महत्व

-डॉ.सुमा जोषि

Areca catechu, जिसे आमतौर पर सुपारी पाम या एरेका पाम के रूप में जाना जाता है, विभिन्न संस्कृतियों में पौराणिक और ऐतिहासिक दोनों महत्व रखता है।

पौराणिक महत्व और ऐतिहासिक महत्व

हिन्दू पौराणिक कथाओं में, सुपारी को विभिन्न देवताओं और अनुष्ठानों से जोडा जाता है। इसका अक्सर धार्मिक ग्रन्थों में उल्लेख किया गया है और कई हिन्दू समारोहों में इसे पवित्र माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि सुपारी का निर्माण भगवान ब्रह्म द्वारा किया गया था, जो हिन्दू धर्म के प्रमुख देवताओं में से एक हैं, ब्रह्माण्ड महासागर (समुद्र मन्थन) के दौरान। ऐसा कहा जाता है कि यह समुद्र से दिव्य उपहारों (रत्नों) में से एक के रूप में उभरा है। कुछ परम्पराओं में, सुपारी को मेहमानों के सम्मान और आतिथ्य के प्रतीक के रूप में और धार्मिक समारोहों के दौरान पेश किया जाता है।

ऐतिहासिक रूप से, सुपारी और सुपारी के व्यापार को प्राचीन ग्रन्थों और पुरातात्विक खोजों में प्रलेखित किया गया है, जो प्राचीन व्यापार मार्गों में एक वस्तु के रूप में इसके महत्व को उजागर करता है। कुल मिलाकर यह एक समृद्ध, सांस्कृतिक, पौराणिक और ऐतिहासिक महत्व रखता है, जो एशिया के विभिन्न हिस्सों में धार्मिक प्रथाओं, पारंपरिक चिकित्सा और सामाजिक रीति-रिवाजों के साथ गहराई से जुडा हुआ है। इसकी खेती और उपयोग क्षेत्र के कई समुदायों की सांस्कृतिक विरासत का अभिन्न अंग बना हुआ है।

वर्गीकरण और वानस्पतिक विवरण

इसका कुल है Arecaceae और Latin name है Areca catechu. यह पतला, सीधा तनावाला एक मध्यम आकार का ताड का पेड है जो 15-30 meter की ऊँचाई तक पहुँच सकता है। पत्तियाँ पंखदार होती हैं, तने के साथ पंख जैसे पैटर्न में कई पत्तियाँ व्यवस्थित होती हैं। इसका फल एक ड्रूप है, जिसे आमतौर पर सुपारी के नाम से जाना जाता है। यह आमतौर पर अण्डाकार आकार का होता है, लम्बाई में लगभग 4-6 cm और इसमें एक ही बीज होता है। फल पकने पर रंग बदलता है, हरे से पीला या नारंगी और अंततः पूरी तरह परिपक्व होने पर गहरा लाल या काला हो जाता है। आयुर्वेद में इसे 'पूगा' (संस्कृत) के नाम से जाना जाता है। इसके आयुर्वेदिक गुण धर्म ऐसे हैं।

रस (स्वाद) : मुख्य रूप से तीखा (कटु) और कडवा (तिक्त) स्वाद वाला माना जाता है, इसके बाद हल्का मीठा (मधुर) स्वाद आता है।

दोषों पर प्रभाव : माना जाता है कि सुपारी कफ और वात दोषों को शान्त करती है जबकि अत्यधिक सेवन से पित्त दोष बढ़ सकता है।

ऊर्जावान गुण (वीर्य) : इसे गर्म करनेवाली (ऊष्मा) शक्ति के रूप में वर्णित किया गया है, जो पाचन और चयापचय को उत्तेजित कर सकता है।

पाचन के बाद का प्रभाव (विपाक) : सुपारी का पाचन के बाद का प्रभाव (विपाक) तीखा होता है, जिसका अर्थ है कि पाचन के बाद यह मुँह में तीखा स्वाद छोड देता है।

सुपारी के किस्में (प्रभेद)

लाल किस्म : यह अपने लाल रंग के मेवों के लिए जानी जाती है। इसके विशिष्ट रंग और स्वाद के कारण इसे अवसर पान चबाने के लिए पसन्द किया जाता है।

सफेद किस्म : यह आम तौर पर हल्के पीले रंग से लेकर हाथीदान्त सफेद तक के हल्के रंग के मेवे पैदा करती है। यह अपने हल्के स्वाद के लिए जाना जाता है और इसका उपयोग पान चबाने के लिए भी किया जाता है।

बौनी किस्म : यह आकार में छोटी होती है। इसकी खेती सजावटी उद्देश्यों के लिए की जाती है और ये कंटेनरों या छोटे बगीचों में उगाने के लिए उपयुक्त हैं।

अधिक उपज देनेवाली किस्में : विशेष रूप ज्यादा उत्पादकता के लिए इसकी खेती की जाती है। इन किस्मों को व्यावसायिक उत्पादकों द्वारा उनके आर्थिक मूल्य के कारण पसन्द किया जाता है।

रोग - प्रतिरोधी किस्में : सुपारी को प्रभावित करनेवाली बीमारियों के बढ़ते प्रसार के साथ, प्रजनकों ने रोग-प्रतिरोधी किस्में विकसित की हैं जो आम कीटों और रोगजनकों के प्रति अधिक लचीली हैं।

सजावटी किस्में : प्रमुखत : सजावट के लिए ही खेती की जाती है जिसमें उनके आकर्षक पत्तें, उनके आकार शामिल हैं।

क्षेत्रीय किस्में : जिन विभिन्न क्षेत्रों में इसकी खेती की जाती है, उनकी अपनी स्थानीय किस्में हो सकती हैं, जो विशिष्ट जलवायु परिस्थितियों और मिट्टी के प्रकारों के अनुकूल होती हैं।

प्रयोजनकारी अंग : सुपारी, पत्ते, मूल, बीज का तैल।

विभिन्न स्वास्थ्य स्थितियों में सुपारी की पत्तियों का उपयोग

माना जाता है की इसकी पत्तियों में रोगनिरोधी गुण होते हैं और पारंपरिक रूप से इसका उपयोग आंतरिक और बाह्य दोनों तरह के संक्रमणों से निपटने के लिए किया जाता है। इन्हें छावों पर लगाया जा सकता है। मौखिक स्वच्छता को बढ़ावा देने के लिए माउथवॉश के रूप में उपयोग किया जा सकता है।

माना जाता है की इसकी पत्तियों में सूजन-रोधी गुण होते हैं। गठिया या त्वचा की जलन जैसी स्थितियों से जुडी सूजन को कम करने के लिए इनका उपयोग पोल्टिस या कंप्रेस में किया जा सकता है।

घावों को ठीक करने और संक्रमण को रोकने के लिए कुचली हुई पत्तियों या पत्तियों के अर्क को सीधे घावों पर लगाया जा सकता है।

कुछ पारम्परिक प्रथाओं से पता चलता है कि इसकी पत्तियाँ पेचिश या दस्त जैसे पाचन विकारों में सहायता कर सकती हैं। इनका सेवन विभिन्न रूपों में किया जा सकता है, जैसे कि चाय के रूप में पीना या हर्बल उपचार में शामिल करना।

इसकी पत्तियों का उपयोग कभी-कभी खांसी और अस्थमा जैसी श्वसन स्थितियों को कम करने के लिए किया जाता है। उनके कथित कफ निस्सारक गुणों के कारण उन्हें कोढ़ के रूप में तैयार किया जा सकता है या भाप लेने में उपयोग किया जा सकता है।

विभिन्न स्वास्थ्य स्थितियों में सुपारी कत्था का उपयेग

सुपारी में एरेकोलिन होता है, जो केंद्रिय तान्त्रिका तंत्र उत्तेजक (Central nerrous System Stimulant) के रूप में कार्य करता है। कुछ संस्कृतियों में माना जाता है कि सुपारी चबाने से सतर्कता बढ़ती है और थकान कम होती है।

सुपारी का उपयोग कभी-कभी पाचन में सहायता करने और पाचनतन्त्र असुविधा के लक्षणों, जैसे सूजन और अपच से राहत के लिए किया जाता है। हालाँकि, इस उपयोग का समर्थन करने के लिए वैज्ञानिक प्रमाण सीमित हैं। माना जाता है कि सुपारी को चूना और तम्बाकू जैसी अन्य सामग्रियों के साथ चबाने से दान्तों की सडन और मसूडों की बीमारी को रोकने में मदद मिलती है। हालाँकि, यह अभ्यास मौखिक कैंसर और अन्य मौखिक स्वास्थ्य समस्याओं के बढ़ते जोखिम से जुडा है।

कुछ पारंपरिक औषधीय पद्धतियाँ अस्थमा और खासी जैसी श्वसन स्थितियों के लक्षणों को कम करने के लिए सुपारी का उपयोग करती हैं। माना जाता है कि सुपारी के कफ निस्सारक गुण बलगम को ढ़ीला करने और सांस लेने को आसान बनाने में मदद करते हैं। हालाँकि, इस उपयोग का समर्थन करनेवाले वैज्ञानिक प्रमाणों की कमी है।

माना जाता है कि सुपारी में रोगनिरोधी गुण भी होते हैं और इसका उपयोग घावों और त्वचा संक्रमणों के इलाज के लिए किया जाता है। हालाँकि, इस उद्धेश्य के लिए उनकी प्रभावशीलता की पुष्टी करने के लिए और अधिक शोध की आवश्यकता है।

सुपारी के अत्यधिक उपयोग के दुष्प्रभाव

सुपारी चबाने से मसूडों की बीमारी, दान्तों में सडन और दान्तों के इनेमल का क्षरण जैसी मौखिक स्वास्थ्य समस्याएँ हो सकती हैं। इससे दान्तों और मुंह पर दाग भी पड सकते हैं।

सुपारी का लम्बे समय तक उपयोग, खासकर जब तम्बाकू और अन्य पदार्थ मिलाया जाता है, तो मुहँ, जीभ और गले के कैंसर सहित मौखिक कैंसर का खतरा काफी बढ़ जाता है।

सुपारी के सेवन से उच्च रक्तचाप, अनियमित दिल की धडकन और हृदयरोग जैसी हृदय सम्बन्धी समस्याओं का खतरा बढ़ जाता है।

सुपारी के अत्यधिक सेवन से पाचन सम्बन्धी समस्याएँ जैसे पेट का अल्सर, गैस्ट्राइटिस और पाचन तन्त्र में सूजन हो सकती है।

सुपारी में मनो-सक्रिय (Psychoactive) पदार्थ होते हैं जो केन्द्रिय तंत्रिका तंत्र पर उत्तेजक प्रभाव डाल सकते हैं, जिससे लत, निर्भरता और वापसी के लक्षण हो सकते हैं।

इसके उपयोग को प्रजनन स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव से जोडा गया है, जिसमें पुरुषों और महिलाओं दोनों में प्रजनन क्षमता में कमी भी शामिल है।

लम्बे समय तक सुपारी चबाने से अन्य स्वास्थ्य स्थितियों जैसे कि लीवर की क्षति, श्वसन समस्याएँ और मानसिक स्वास्थ्य विकार का खतरा बढ़ जाता है।

इसके सेवन और उपयोग से सम्भावित स्वास्थ्य जोखिमों के कारण सावधानी बरतनी चाहिए, खासकर जब इसे चबाया जाता है। किसी भी हर्बल उपचार या पारंपरिक दवाओं का उपयोग करने से पहले डाक्टर का परामर्श लें।

स्वस्थ रहें, सुरक्षित रहें।

❁❁❁

मई महीने का राशिफल

- डॉ.केशव मिश्र

मेष राशि - यह माह आपके लिए मध्यम फलदायक सिद्ध होगा। अनावश्यक तनाव-वादविवाद, परेशानी, भाग-दौड़ की अधिकता होने के कारण मन खिन्न रहेगा। व्ययाधिक्य, राजकीय सहयोग, सफल यात्रा, श्रमसाध्य सफलता।

वृषभ राशि - यह माह आपके लिए उत्तम फलदायक रहेगा। आर्थिक स्थिति मजबूत, नियमित दिनचर्या होने से स्वस्थ शरीर रहेगा। रोजी-रोजगार, व्यवसायिक क्षेत्रों से लाभ, श्रमपूर्ण सफलता, नौकरी में उन्नति। इष्ट-मित्रों, बन्धु-बान्धवों का सहयोग, शैक्षणिक कार्यों में व्यवधान, शुभ संवाद, राजकीय समस्या का समाधान, आर्थिक संतुलन।

मिथुन राशि - आपके लिए गुरु का गोचर परिवर्तन शुभ प्रभावी नहीं है अतः आप सुझ-बुझ, सावधानी से लोगों के साथ व्यवहार रखें जिससे कार्यक्षेत्र अवरोध न हो।

कर्कटक राशि - यह माह आपके लिए शुभदायक रहेगा। आस-पास सुखद वातावरण, लोगों का सहयोग, नये-नये विचारों का मन में उदय होगा। नियमित दिनचर्या, भूमि-वाहन, गृह प्राप्ति, दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा।

सिंह राशि - दिनचर्या परिवर्तन होने से स्वास्थ्य बाधा, कार्य क्षेत्रों में बाधा, धन व्यय, कुटुम्बिक उत्तरदायित्व में कठिनाई, वाद-विवाद, अपमान। रोजी-रोजगार सामान्य रहेगा, सहयोगियों से अनुकूलता, मास के उत्तरार्ध में ग्रहों का गोचरीय परिवर्तन होने से सकारात्मक स्थिति बनेगी। यत्र तत्र यात्रा होने से कष्ट, मन खिन्न रहेगा, आर्थिक चिन्ता।

कन्या राशि - यह माह आपके लिए उत्तम सिद्ध होगा। दैनन्दिन जीवन में व्यतिक्रम, कार्य क्षेत्रों में सफलता, धन का अभाव, श्रमसाध्य असफलता, उद्योग-धन्धा सामान्य चलेगा। मास मध्य में ग्रह परिवर्तन होने से आरोग्य सुख, व्यापार क्षेत्रों में प्रगति, धनलाभ, सर्वतोमुखी विकास। छात्रों के लिए उत्तम समय, प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता। तीर्थयात्रा, धार्मिककार्य सम्पादन।

तुला राशि - स्वास्थ्य उत्तम, आर्थिक स्थिति मजबूत, अधिक वाद-विवाद में व्यस्तता होने के कारण मन खिन्न रहेगा। सामाजिक कार्यों में संलग्नता, धार्मिक कार्यों के प्रति रुचि, अपनों-इष्टमित्रों का सहयोग, शैक्षणिक प्रगति, छात्रों के लिए समय अनुकूल।

वृश्चिक राशि - यह माह आपके लिए उत्तम रहेगा, अन्न-धन-वस्त्र-उपहारों की प्राप्ति। आरोग्य सुख होने के कारण मन प्रसन्न रहेगा, निकटस्थ यात्रा, अविवाहितों के लिए विवाह योग, साधुजनों का समागम, मांगलिक कार्य, विद्या-बुद्धि का विकास।

धनुष राशि - स्वास्थ्य सामान्य, उद्योग-धन्धे में उदासीनता, पारिवारिक-कौटुम्बिक उत्तरदायित्व निर्वहन में बाधा। छात्रों को प्रतियोगी क्षेत्रों में सफलता, शैक्षणिक प्रगति, इष्ट मित्रों का सहयोग, सामाजिक व्यस्तता, लेन-देन से बचे, ऋण बाधा, अपने वाणी-व्यवहार पर नियन्त्रण रखे अनावश्यक वाद-विवाद, पत्नी का ध्यान रखे।

मकर राशि - नियमित दिनचर्या, स्वास्थ्य उत्तम, साहस पराक्रम में वृद्धि, एकाधिक स्त्रोतों से धनागम। कार्य क्षेत्रों का विस्तार, गृह-भूमि, कृषि कार्यों में प्रगति, रचनात्मक कार्यों में प्रगति। व्यापार क्षेत्रों से लाभ, सम्मान प्रतिष्ठा में वृद्धि, शैक्षणिक उन्नति। वैवाहिक जीवन सुखद, धनलाभ, संतान कष्ट।

कुंभ राशि - यह माह आपके लिए उत्तम फलदायक रहेगा, आरोग्य सुख, वाणी-व्यवहार की कुशलता से कार्य सिद्धि, रोजी रोजगार कार्यों में वृद्धि, आर्थिक संतुलन, ज्ञान वृद्धि, गृहस्थजीवन सुखमय। अच्छे लोगों से सम्पर्क होने के कारण कार्य क्षेत्रों का विस्तार, सरकारी नौकरी पेशों में पदोन्नति।

मीन राशि - अनियमितता के कारण स्वास्थ्य बाधा, उग्र कर्मों में रुचि, सामयिक कार्यों में प्रगति। कुटुम्बिकजनों का सहयोग, पारिवारिक वातावरण सुखद। वैवाहिक जीवन सुखमय, आर्थिक समुन्नति, छात्रों के लिए पठन-पाठन में व्यवधान, विशिष्टजनों से सम्पर्क।

नीतिकथा

चतुर चोर

- श्री के.रामनाथन

राजा रत्नसेन अपने देश का शासन नैतिक धर्म के आधार पर कर रहे थे। एक बार दो सैनिकों ने एक चोर को उनके सामने प्रस्तुत किया और कहा, ''महाराज! यह तो बडा धोखेबाज और चतुर चोर है। इसका नाम धरमचन्द है। यह हमारे देश के अनेक लोगों को अपने बुद्धिबल के सहारे विश्वास पैदा करके उनको धोखा दे दिया है। यह तो धोखा देने में इतना चतुर है और बहुत आसानी से उसमें से बच निकल जाता है। हम बडे प्रयास से इसको पकड लाये हैं और आप इसे उचित दंड दीजिए।'' यह सुनकर राजा क्रोधित हो उठे और उसे देखकर उन्होंने कहा, ''इसने हमारे देश के मासूम लोगों को धोखा दे दिया है इसलिए इसको जीवन भरा जेल में बंद रखने की आज्ञा देता हूँ।''

यह सुनकर चतुर चोर धरमचन्द ने राजा को देखकर कहा, ''महाराज! मुझपर दया कीजिए। मेरे कार्य से देश में किसी को कोई भारी संकट तो नहीं आया है और किसी के जीवन का अंत भी नहीं हुआ है। यह तो इतना ही है आप अपने दैहिक बल से जैसा चाहो अपना जीवन बिता रहे हैं, लेकिन मेरी दशा ऐसी नहीं है। इसलिए मैं अपने बुद्धि बल से अपना जीवन बिता रहा हूँ। इसलिए मुझे क्षमा कर दीजिए।'' यह सुनकर राजा ने कहा, ''शाबाश, मेरी ताकत के समक्ष इस दुनिया में कोई नहीं है, क्या तुम्हारी युक्ति के समक्ष भी ऐसा कोई नहीं है?''

इसका जवाब देते हुए चतुर चोर ने नम्रता से कहा, ''महाराज! मैं अपने बुद्धि बल के सहारे जितना भी कठिन कार्य हो उसे पूरा कर दूँगा।'' यह सुनकर राजा जोर से हँस पडे और कहा, ''भला धरमचन्द! अब मैं तेरे बुद्धि बल को पहचानने के लिए दो प्रकार की परीक्षायें रखना चाहता हूँ। यदि उनमें तुम सफल निकलोगे तो तुम्हें पुरस्कार दिया जाएगा न तो जेल में बंद रहा पडेगा।'' राजा के शर्त को सुनकर चतुर चोर ने बडे प्रसन्न मन से कहा, ''महाराज! आपकी परीक्षा में मैं जरूर अपने बुद्धि बल के सहारे सफल हो जाऊँगा।''

राजा ने चतुर चोर को देखकर कहा, ''मेरी घुडसेना में पंचकल्याणी नामक एक विशिष्ट घोडा है। तुम्हें अपने बुद्धि बल के सहारे उसकी चोरी करनी है।'' यह सुनकर उसने बडी दृढता से कहा, ''महाराजा! मैं जरूर उस विशेष घोडी चोर कर दूँगा।'' चतुर चोर को भेज देने के बाद राजा ने अपने सैनिकों को बुलाकर आज्ञा दी कि अधिक निगरानी से पंचकल्याणी नामक उस घोडे की रक्षा करो। राजा की आज्ञानुसार अनेक सैनिक उस विशेष घोडे की रक्षा के लिए नियुक्त किये गये। उस दिन-रात के समय चतुर चोर उस स्थान पर जा पहुँचा, जहाँ वह विशेष घोडा रखा हुआ था। उसने देखा कि उस एक घोडे की रक्षा के लिए दस सैनिक खडे थे। उसके बाद वह सैनिकों के कमरे में जाकर उनकी वर्दी को पहन लिया और पहरेदार की तरह वहाँ उनके पास जा पहुँचा। उसने उन सबको देखकर कहा, ''राजमहल से खबर मिली है कि चतुर चोर पकडा गया है और राजा इस खुशी को मनाने के लिए हमें पीने को शरबद भेजा है।'' इतना कहकर उसने

वहाँ के सैनिकों को शरबत पिलवाया। उस शरबत में नींद की गोली मिश्रित थी, इसलिए वे सैनिक थोडे ही समय में गहरी नींद में चले गये थे। चतुर चोर तुरंत उस घोडे पर बैठकर वहाँ से निकल गया।

अगले दिन वह राजा से मिलकर उनके घोडे को सौंपते हुए कहा, ''महाराज! मैं अपने बुद्धि बल के सहारे घोडे को ले आया हूँ, अब ले लीजिए अपना यह घोडा।'' यह देखकर राजा चकित हो उठे। फिर भी राजा ने उसे देखकर कहा, ''धरमचन्द! इस पहली परीक्षा में तुम सफल हो गये। लेकिन अगली परीक्षा तो अधिक कठिन होगी और उसमें तुम सफल नहीं हो पाओगे।'' लेकिन उनके इस कथन को इनकार करते हुए उसने कहा, ''महाराज! मुझे अपने बुद्धि बल पर बडा विश्वास है।''

उसके बाद राजा ने उसे देखकर कहा, ''तुमको महारानी के गहनों में से एक की चोरी करनी है। यदि तुम इसमें सफल नहीं हो आगे तो जीवन भर जेल में ही रहना होगा।'' लेकिन वह तो उस कार्य को करने के लिए बडी हिम्मत से तैयार हो गया। इतने में राजा रानी को उसके महल में मिलकर सारी बातें बतायी और उसे सावधान रहने की सलाह दी। साथ ही उन्होंने अनेक सैनिकों को पहरे में भी रख दिया और वे खुद महारानी के निकट में ही ठहर गये। रात के समय राजा ने सुना कि किसी के आहट सुनाई पड रही है। उन्होंने तुरंत बाहर आकर देखा तो मालूम पडा कि एक सीढी के सहारे वह चतुर चोर ऊपर चढ आ रहा है। राजा ने चट से उस सीढी को नीचे गिरा दिया और समझा कि वह नीचे गिरकर मर गया होगा। उसके बाद वे भोजन करने के लिए अन्दर चले गये। असल में धरमचन्द द्वारा सीढी पर एक पुतला रखा हुआ था, वही धडाम से नीचे गिरा था और राजा गलत समझ गये थे। राजा के भोजन के लिए निकल जाने के बाद वह चतुर चोर महारानी के कमरे में गया परदे के पीछे थी महारानी को देखकर कहा, ''महारानी! हमारा बडा भाग्य है वह चोर सीढी से नीचे गिरकर मर गया। फिर भी हमें थोडे दिनों तक सावधानी से रहा चाहिए। आप अपने गहनों को मेरे हाथ में दे दीजिए, मैं उनको सुरक्षित रखता हूँ।'' महारानी ने उसके कहे अनुसार कर दिया। चतुर चोर उन गहनों के साथ वहाँ से निकल गया।

थोडे समय के बाद राजा महारानी से मिलने आये। वे उससे कहने लगे, ''भला, वह चतुर चोर मर गया। फिर भी थोडे दिनों तक सावधानी से रहना अच्छा है।'' यह सुनकर महारानी ने कहा, ''इसी बात को आपने एक सैनिक द्वारा पहले ही मुझे कहवा दिया है और मेरे गहनों को भी उसके द्वारा ले लिया है। अब फिर उसे दुहराने की क्या जरूरत है।'' यह सुनकर राजा को बडा धक्का लगा और उन्होंने समझ लिया कि यह चतुर चोर का काम है। अगले दिन वह चतुर चोर राजा से मिला और महारानी के गहनों को वापस देते हुए विनम्रता से कहा, ''महाराज! मैं अपने बुद्धि बल को साबित कर चुका हूँ और आप मुझे दंड से मुक्त कर दीजिए।''

यह सुनकर राजा ने कहा, ''नहीं मैं तुमको ऐसे ही छोडना नहीं चाहता। मैं तुमको अपने राज्य में जासूस का पद देना चाहता हूँ। तुम अपने बुद्धि बल के सहारे अडोस-पडोस के देश में होती सेनाओं के बारे में समय-समय पर खबर पहुँचाने का कार्य करो।''

राजा की बात सुनकर चतुर चोर अत्यंत खुश हुआ। उसने गदगद होकर में कहा, महाराजा मैं आपके कहे अनुसार अपना कार्य सफलतापूर्वक निभाऊँगा।

❋❋❋

चित्रकथा

भक्तों को तंग करें तो

तेलुगु मूल - डॉ.के.रविचंद्रन्
अनुवादक - डॉ.एम.रजनी
चित्रकार - श्री टी.शिवाजी

अक्काराम का शिष्य घर से बाहर आकर...

गुरूजी! अपने घर में सभी जानवर अचानक मर गये हैं। घर में सभी उल्टियाँ और दस्त से पीडित हैं। घर कब्रिस्तान बन गया है।

माँ मेरी गलतियों को माफ करो। मुझ पर दया करके मेरी रक्षा करो। आप की महानता को न जान कर मैं तुम्हे अपमानित करना चाहता था। लेकिन मैं ही हार गया। तुम्हारे चरण ही मेरे लिए अब सहारा है।

अब से समझदार से जी ओ। भक्तों को परेशान करने पर भगवान माफ नहीं करेंगे। भगवतापचार एक महा पाप है। यहाँ आनेवाले भक्त अपने पापों का निवारण करना चाहते हैं। उनको दुःख देकर तुम क्यों उनके पापों की गबरी मोल लेते हो? तुम ने गलती की है। अब से तो सुधारो।

स्वामी वेंकटेशा!

वेंगम्मा!
क्या तुम ने मुझे बुलाया?

स्वामी! अब मैं यहाँ नहीं रहूँगी। मैं शांति से तपस्या करना चाहती हूँ। यहाँ पर ध्यान और भक्ति में बाधा पहुँच रही है। कोई एक निर्जन प्रांत को आप ही दिखाइए।

वेंगम्मा। तुंबुर तीर्थ को जाकर योग साधना करो। वहाँ कोई नहीं आएगा।

धन्य हूँ स्वामी! धन्य हूँ। संकटहरण! अनाथरक्षक! गोविंदा... गोविन्दा!

लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु!

2

तिरुमल तिरुपति देवस्थान,
तिरुपति।

प्रश्नोत्तरी (क्विज) की नियमावली

1) प्रश्नोत्तरी की प्रतियोगिता केवल 15 वर्षों के अंदर बच्चों के लिए है।

2) भाग लेने वाले बच्चे हिंदु धर्म के होना अनिवार्य है।

3) इस प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले बच्चों के अभिभावक अनिवार्य रूप से ति.ति.दे. के द्वारा प्रकाशित होने वाली 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक मासिक पत्रिका का चंदादार होना आवश्यक है। प्रश्नोत्तरी के जवाबों के साथ अनिवार्य रूप से चंदादार की अपनी चंदा संख्या, नाम, पता, पिन-कोड के साथ फोन नंबर भी स्पष्ट रूप से लिख कर हमारे कार्यालय को भेजना चाहिए।

4) प्रश्नोत्तरी के जवाब, प्रश्नों के नीचे सूचित खाली जगहों पर लिख कर भेजना चाहिए।

5) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र ओरिजनल या जिराक्स प्रति मान्य है।

6) जवाबों में कोई काट-छांट या सुधार नहीं होना चाहिए।

7) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र **इस महीने का 25वाँ तारीख** के अंदर पहुँचाने की अंतिम तिथि है।

8) इस प्रश्नोत्तरी या क्विज में सही जवाब लिखने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को मात्र ही 'लक्कीडिप पद्धति' में चुन कर विजेताओं की घोषणा की जाती है।

9) घोषित विजेताओं के नाम आगामी मास की 'सप्तगिरि' पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं।

10) ति.ति.दे. के प्रधान संपादक कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों के बच्चे इस प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के लिए अयोग्य हैं।

11) प्रश्नोत्तरी से संबंधित कोई भी समाचार फोन से नहीं दिया जाएगा। कृपया फोन से संपर्क न करें। ति.ति.दे. का निर्णय ही अंतिम है।

12) क्विज का समाधान भी इसी पुस्तक में है।

प्रश्नोत्तरी-जवाब कृपया इस पते पर भेजे :-

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे. प्रेस परिसर, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507, तिरुपति जिला, आंध्र प्रदेश।

बच्चे का नाम.....

लिंग/आयु....., चंदा नंबर.....

पता.....

.....

मोबाइल नं.....

क्विज-22

1) इस महीने कौन-सा नदी का पुष्कर आता है?

ज).....

2) तिरुपति में स्थित स्थानीय ग्राम देवता का नाम क्या है?

ज).....

3) अक्षयतृतीया कब आती है?

ज).....

4) किस भगवान को प्रह्लाद ने आराधन करते है?

ज).....

5) हिरण्यकश्यप को किसने वध किया?

ज).....

6) तिरुच्चारवाणम् मंदिर का विमान गोपुर का नाम क्या है?

ज).....

7) तिरुच्चारवाणम् मंदिर के तीर्थ पुष्करिणी का नाम क्या है?

ज).....

8) तिरुप्पाडहम् मंदिर में विराजित माताजी का नाम क्या है?

ज).....

9) तिरु निलात्तिङ्गल तुण्डम मंदिर के विमान गोपुर का नाम क्या है?

ज).....

10) तिरुमल, आनंदनिलय में विराजित भगवान जी का नाम क्या है?

ज).....

11) वैशाख मास, पूर्णिमा तिथि का क्या विशेषता है?

ज).....

12) आं.प्र. में प्रसिद्ध श्रीकूर्म मंदिर कौन-सा नदी के तट पर विराजित है?

ज).....

13) हालाहल विष को किस भगवान ने ग्रहण किया है?

ज).....

14) देव-दान किस सागर को मंथन किया?

ज).....

15) सुपारी का शास्त्रीय नाम क्या है?

ज).....

बिंदी को जोड़िए

रंगों को भरिये क्या!

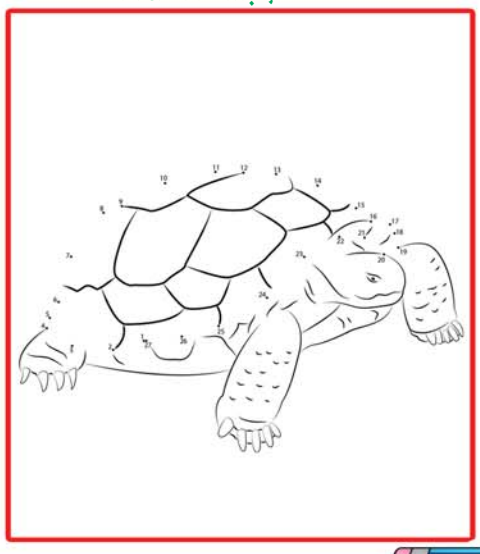

निम्न लिखित को मिलाएँ!

1) गणेश	अ) परमेश्वर
2) पार्वती	आ) कमलपुष्प
3) हनुमान	इ) शिद्धि-बुद्धि
4) श्रीमहाविष्णु	ई) राम भक्त
5) लक्ष्मीदेवी	उ) शंख-चक्र

1) इ 2) अ 3) ई 4) उ 5) आ

नृसिंह मंत्र

उग्रं वीरं महाविष्णुं
ज्वलंतं सर्वतोमुखम्।
नृसिंहं भीषणं भद्रं
मृत्युमृत्युं नमाम्यहम्।।

चित्र में अंतर खोजे!

१) बादल
२) पक्षी का पैर
३) पक्षी
४) घर का सीमा
५) पेड़
६) मुर्गी
७) खिड़की

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

सप्तगिरि

(आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका)

चंदा भरने का पत्र

1. नाम : .....
   (अलग-अलग अक्षरों में स्पष्ट लिखें) .....
   .....
   पिनकोड .....
   मोबाइल नं .....

2. वांछित भाषा : ☐ हिन्दी ☐ तमिल ☐ कन्नड
   ☐ तेलुगु ☐ अंग्रेजी ☐ संस्कृत

3. वार्षिक चंदा ☐ रु.240/-; जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) ☐ रु.2,400/-;
   विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा ☐ रु.1,030/-

4. चंदा का पुनरुद्धरण :
   (अ) चंदा की संख्या :
   (आ) भाषा :

5. शुल्क का विवरण :
   धनादेश (BC's) / मांगड्राफ्ट संख्या (D.D.) /
   भारतीय डाकघर (IPO) / ई.एम.ओ. (EMO) / :
   दिनांक :

स्थान :
दिनांक : चंदा भरनेवाले का हस्ताक्षर

- वार्षिक चंदा : रु.240/-, जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) : रु.2,400/- 'प्रधान संपादक, ति.ति.दे., तिरुपति' के नाम से मांगड्राफ्ट लेकर निम्न सूचित पते पर भेज सकते हैं।
- नवीन चंदादार या चंदा का पुनरुद्धार करनेवाले इस पत्र के कूपन को काटकर, एक कागज पर चंदादार को अपने पूरे विवरण के साथ सुस्पष्ट लिखकर निम्न पते पर भेजना चाहिए।

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे.प्रेस परिसर, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507. तिरुपति जिला, (आं.प्र)

धोखा मत खाओ!

हमारी दृष्टि में आया है कि कुछ लोग 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका की सदस्यता के लिए यह कह कर राशि वसूल करने में मग्न हैं कि वे श्री बालाजी के दर्शन, प्रसाद आदि की व्यवस्था करेंगे। ऐसे लोगों पर विश्वास न करें। उनसे सावधान रहें।

श्री बालाजी के दर्शन और प्रसाद पाने केलिए 'सप्तगिरि' पत्रिका कार्यालय से कोई संपर्क न करें। क्यों कि उन से पत्रिका कार्यालय का कोई संबंध नहीं है। कृपया चंदादार अपना चंदा नकद को सीधा 'प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, ति.ति.दे., तिरुपति' पता को भेजना पडेगा।

ति.ति.देवस्थान ने सदस्यता राशि लेने के लिए किसी व्यक्ति को नियुक्त नहीं किया। अतिरिक्त राशि का भुगतान न करें। दलालों पर विश्वास मत करों।

STD Code: 0877

दूरभाष :
2264359, 2264543.

संपादक : 2264360

कॉल सेंटर नंबर :
2233333, 2277777.

मंत्र
ॐ नमो वेंकटेशाय

Printed by Sri P. Ramaraju, M.A., and Published by Dr.K. Radha Ramana, M.A., M.Phil., Ph.D., on behalf of Tirumala Tirupati Devasthanams and Printed and Published at Tirumala Tirupati Devasthanams Press, K.T.Road, Tirupati-517 507. Editor : Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

हृषिकेश

नारायणवनम्

जम्मलमडुगु

श्री कल्याण वेंकटेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

2024 मई 21 से 29 तक

21-05-2024 मंगलवार

दिन : ध्वजारोहण - रात : महाशेषवाहन

22-05-2024 बुधवार

दिन : लघुशेषवाहन - रात : हंसवाहन

23-05-2024 गुरुवार

दिन : सिंहवाहन - रात : मोतीवितानवाहन

24-05-2024 शुक्रवार

दिन : कल्पवृक्षवाहन - रात : सर्वभूपालवाहन

25-05-2024 शनिवार

दिन : पालकी में आरूढ़ मोहिनी अवतारोत्सव - रात : गरुडवाहन

26-05-2024 रविवार

दिन : हनुमद्वाहन - रात : गजवाहन

27-05-2024 सोमवार

दिन : सूर्यप्रभावाहन - रात : चंद्रप्रभावाहन

28-05-2024 मंगलवार

दिन : रथ-यात्रा - रात : अश्ववाहन

29-05-2024 बुधवार

दिन : चक्रस्नान - रात : ध्वजावरोहण

श्री भू समेता श्री नारापुर वेंकटेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

2024 मई 21 से 29 तक

21-05-2024 मंगलवार

दिन : ध्वजारोहण - रात : महाशेषवाहन

22-05-2024 बुधवार

दिन : लघुशेषवाहन - रात : हंसवाहन

23-05-2024 गुरुवार

दिन : मोतीवितानवाहन - रात : सिंहवाहन

24-05-2024 शुक्रवार

दिन : कल्पवृक्षवाहन - रात : हनुमद्वाहन

25-05-2024 शनिवार

दिन : मोहिनी अवतारोत्सव - रात : गरुडवाहन

26-05-2024 रविवार

दिन : सर्वभूपालवाहन - रात : कल्याणम्, गजवाहन

27-05-2024 सोमवार

दिन : रथ-यात्रा - रात : अश्ववाहन

28-05-2024 मंगलवार

दिन : सूर्यप्रभावाहन - रात : चंद्रप्रभावाहन

29-05-2024 बुधवार

दिन : चक्रस्नान - रात : ध्वजावरोहण

SAPTHAGIRI (HINDI) SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthnams
Printing on 25-04-2024 & Posting at Tirupati RMS Regd. with the Registrar of Newspapers for India under RNI No.10742/1957. Postal Regd.No.TRP/152/2024-2026
"LICENCED TO POST WITHOUT PREPAYMENT No.PMGK/RNP/WPP-04(2)/2024-2026"
Posting on 5th of every month.

नारायणवनम्

श्री कल्याण वेंकटेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

दि.21-05-2024 से दि.29-05-2024 तक